(श्री) मयूर चित्रम् - with commentary in old Hindi by केशव प्रसाद द्विवेदी - A work of astronomical forecasting on Weather and Socio-economic events - (a) very brittle condition, so that the total pages are tissued, careful handling is needed. 5/e, Agra, 1883.

1248

[redacted]

30

204

Bill No. 3/07-08

58

2008 - 2009

श्रीगणेशायनमः

श्लोक॥उदयास्तमनंकेनोगणितंनप्रकाशयन्

इह्लोचने कं...

श्री

मयूरचित्रम

आगरा कालेज़ के हैड संस्कृत पंडित केशव

प्रसाद द्विवेदी ने आगरा बेलन गंज में वारह

गोदामों में से निज गोदा

...मकेमध्य

विद्यारत्नाकर नाम निज यंत्रालय मे मुद्रि

त किया

...ऐक्ट २५ के अनुसार सन् १८६८ में रजिष्टरीहुई

पांचवी वार } सन्१८८३
१००० पुस्तक } ईसवी

Fifth edition }
1000 copies }

सूचना

प्रगट होय कि यह ग्रंथ बहुत अच्छा है इस में नारद मुनिने बा
रहो महीने के फल ऐसे कहे हैं कि जिन से प्रत्येक वस्तु के स
स्ते और महंगे होने तथा वर्षा आदि का सब वृत्तान्त जाना ज
ता है जिस से सहजही में मनुष्य सम्बत् सर का सब हाल क
ह सके इसलिये मैंने इस के टीका बनाने और छापने का उद्यो
ग कर कई पुस्तकें मंग वाई परन्तु सब बहुत अशुद्ध पाईं इ
सलिये इसके सुधारने और टीका बनाने में बहुत परिश्रम हु
आ और रजिस्टरी भी कर वाई गई है इस से सब लोगों को
उचित है कि टीका बनाने वाले की आज्ञा बिना इस ग्रंथ को न
छापे ॥

पण्डित केशवप्रसाद शर्म्मा द्विवेदी

श्रीगणेशायनमः

श्लोक ॥ उदयास्त मनं केतोर्गणितेन प्रकाश्यते
इहोच्यते फलं तस्य भेदाश्च मुनि भाषिताः

टी० ॥ केतु का उदय अस्त गणित से प्रकाशित होता है इस ग्रंथ में केतु का फल कहा जाता है और केतु के जो भेद मुनियों ने कहे हैं वे भी कहे जाते हैं ॥१॥

येस्युः खदिव्य भौमाश्च उत्पातास्त्रिविधाश्च ते
एकोत्तर शतं प्रोक्ताः सहस्र मिति चापरे ॥२॥
एकोपि बहुधा भाति प्राहै तन्नारदो मुनिः ॥
वक्ष्यामि च फलं तेषां यदुक्तं मुनि पुङ्गवैः ३।

टी० ॥ उत्पात तीन प्रकार के हैं अन्तरिक्ष दिव्य और भौम इन तीनों के भेद एक सौ एक हैं ॥२॥ और दूसरे आचार्यों ने सहस्र भेद कहे हैं नारद मुनि कहते हैं कि एक भी अनेक प्रकार का होता है उन्हों के जो फल मुनियों ने कहे हैं तिन को कहते हैं ॥३॥

यावन्त्य हानि दृश्यते तावन्मासैः फलं भवेत्
मासे मासे च विज्ञेय मित्यूचुर्मुनयो परे ॥ ४

टी० ॥ जितने दिन तक केतु दीखे उतने महीने तक केतु का फल जानना चाहिये अन्य मुनि कहते हैं महीने महीने में फल जानना अर्थात् जिस महीने में उदय होय तो उसी में उसका फल जानिये ॥४॥

सुस्निग्धो रुचिरः सूक्ष्मश्चर्जुः शुक्लः शुभप्रदः
विपरीतो शुभः केतुस्त्रिशिखेन्द्र धनु प्रभः ५

टी० ॥ चिकना मनोहर देखा सदृश सीधा श्वेत वर्ण ऐसा केतु शुभकारी है इस से विपरीति अशुभ है और त्रिशूल के आकार तथा धनुष सदृश अशुभ है ॥

मुक्ताकनकशंकाशाः पंच विंशति संख्यकाः
प्राक्‌परस्यान्दृते दृष्टाः सूर्यपुत्रा भयप्रदाः ६

टी०॥ मोती और सुवर्ण की सी जिन की कान्ति है वे पच्चीस तारे चोटी वाले सूर्य के पुत्र हैं वे पूर्व में तथा पश्चिम में दीखें तो भयकारी जानना॥ ६॥

वह्नि वर्णाग्निसंकाशाः पंच विंशति संख्यकाः
आग्नेय्यां दिशि संदृष्टा वान्हिपुत्रा भयप्रदाः ७

टी०॥ जिन की कान्ति अग्नि कीसी है और अनेक रङ्ग वाले अग्नि कोण में जो दीखें तो भयकारी हैं॥ ७॥

याम्यां ऽऽशा संस्थिताः रूक्षाश्च रूक्षा वक्रशिखास्तथा तावतो वै मृत्युसुताः प्रजा क्षय कराः स्मृताः ८

टी०॥ और जो तारे श्याम वर्ण हैं टेढ़ी शिखा वाले हैं वे पच्चीस २५ तारे यम के पुत्र हैं और दक्षिण दिशा में दीखें तो प्रजा के क्षय कारी हैं॥ ८॥

कुल्ला काराश्च विशिखा जल तैल सम प्रभाः
द्वाविंशद्भूमितनया दुर्भिक्षायैशादिग्गताः ९

टी०॥ जिन की जल में डाले हुए तेल की सी कान्ति है और गोल हैं वे तारे बाईस पृथ्वी के पुत्र हैं ईशान में दीखें तो दुर्भिक्ष कारी हैं॥ ९॥

हिमरश्मि हरिरूपा भास्वन्तश्चन्द्रसुताः स्मृताः
उत्तरे स्यां गता दृष्टास्तदा शुभ फल प्रदाः १०॥

टी०॥ चन्द्रमा की सी तथा सुवर्ण की सी जिन की कान्ति है ऐसे तीन तारे चन्द्रमा के पुत्र हैं उत्तर दिशा में दीखें तो शुभफल के दाता हैं॥ क्रूरास्त्रिवर्णास्त्रिशिखः क्रूरो ब्रह्म सुतः स्मृतः
सर्वाशासु संदृष्टो ब्रह्मदण्डः स्यात्‌ कृतः ११।

टी०॥ जिसके तीन रङ्ग हैं तीन ही शिखा हैं ऐसा एकतारा ब्रह्मा का पुत्र है यह कोई सी दिशा में दीखा हुआ पंचम दण्ड से क्षय कारी जानना॥ २१॥

विसर्पाख्याः शुक्लासुताः सुस्निग्धाः श्वेततारकाः
चतुराशीति संख्याकाः पुरो दृष्टाः भयप्रदाः२२

टी०॥ जो चिकने और श्वेत वर्ण हैं वे विसर्प नाम के चोटी वाले चौरासी तारे शुक्र के पुत्र हैं पूर्व में दीखे तो भयकारी है॥२२॥

सुस्निग्धाद्विशिखाश्चैव षष्टिश्च कनकाह्वयाः
शनैश्चरसुता घोराः केतवः श्वेततारकाः२३

टी०॥ बहुत चिकने दो चोटी वाले साठ केतु के तारे कनक नामे के शनिश्चर के पुत्र हैं श्वेत वर्ण दीखे हुए घोर हैं॥२३॥

एकतारा महास्वल्पा श्वेततारा महाप्रभा॥
द्विशाखाश्च गुरोः पुत्राः प्रायशो दक्षिणाश्रयाः
नामतो धिकचा घोराः षष्टिः पंचाधिकाः स्मृताः

धिकच नाम के पैंसठ ६५ तारे और चोटी वाले बृहस्प हैं उन्हों में एकतारा छोटा है बांकी बड़े हैं और स्वेत ण में देखे हुए भयकारी है॥ २४॥

सौम्य पुत्रास्तारकाख्याः सर्व दिक्प्रभवाश्चते
नातिव्यक्ताश्च रूक्षाश्च श्वेतरूपा भयावहाः
एकाधिकाश्च पंचाशत्केतवः परिकीर्तिताः

टी०॥ मंद प्रकाश रूखे श्वेत वर्ण तारे के नाम इक्यावन ५१ ता बुध के पुत्र हैं दक्षिण में दीखे तो भयकारी जानिये॥२५॥

षष्टिः कुजात्मजा रक्ताः कौंकुमाः सौम्यादिग्गताः
त्रिशिखाश्च चिताराश्च महापापफलप्रदाः२६

टी०॥ तीन शिखा वाले रक्त वर्ण तथा केसरि के रंग वाले

६० तारे मंगल के पुत्र हैं और एक एक तारे के तीन तीन देखने है
वे उत्तर दिशामें देखे हुए बहुत बुरे फल के देने वाले हैं॥१६॥

राहु पुत्रा स्त्रय स्त्रिंशं तख्याता स्तमसकीलकाः
चन्द्रार्क मण्डल स्थांस्ते लोकानां कष्ट दायकाः

टी०॥ तमस कीलक नाम के तेतीस ३३ तारे राहु के पुत्र हैं चंद्र मंडलमें और सूर्य मंडल में रहते हैं ये दीखे हुए लोक को कष्ट देने वाले हैं॥१७॥

नाना वर्णाग्नि पुत्राश्च किरन्तोऽग्निं द्विचूडिनः
विंशोत्तरशतं विश्व रूपा वन्हि भयप्रदाः १८

टी०॥ एक सौ बीस तारे विश्व रूप नाम के अग्नि के पुत्र हैं जि न के दो दो चोटी और अनेक रंग हैं और अग्नि को वर्षाने वाले हैं दीखे हुए भय कारी हैं॥१८॥

अरुणाख्या वायु पुत्राः वर्णतश्श्यामलोहिताः
दिताराश्च मरुअरब्या भयदाः सप्तसप्ततिः

टी०॥ सतहत्तर ७७ तारे अरुण नाम के वायु के पु
के आकार और लाल काला जिन को रंग है देखे हु
वाले हैं॥१६॥

प्रजा पति सुता श्चाष्टौ तारा मंडल वर्तिन्
तारा पुञ्ज प्रतीकाशा गणकाभय दायि

टी०॥ तारा मंडल में रहने वाले और ताराओं के गुच्छा के
गणक नाम के आठ तारे प्रजा पति के पुत्र भय दायक है॥२०॥

द्विशतैचैवचत्वारः साशिखाः श्वेत रश्मयः
चतुरस्त्रा ब्रह्म पुत्रा महा भय करा मताः २१

टी०॥ दो सौ चार २०४ तारे चौकोर और चोटी वाले स्वेतजिन की किरण हे ब्रह्मा के पुत्र हैं महा भय को करने वाले हैं॥२१॥

वंशगुल्म समाप्रोक्ताः द्वाविंश दरुणात्मजाः
शशि प्रभाश्च का काख्याः केतवः कष्टदामताः
टी०॥ वांसो के गुच्छा समान वाईस २२ तारे काक नाम के वरु
णा के पुत्र हैं चन्द्रमा कीसी जिन की कांति दीखे हुए कष्ट कारी हैं
काल्ल पुत्राः कवंधाख्याः कवंध सदृशारुणाः
षणवतिश्च भयदा हिम रश्मि सम प्रभाः २३
टी०॥ छयानवे तारे कवंधनाम के विना सिर के नर के आकार हो
ते हैं रंग लाल श्वेत ता चंद्रमा कीसी जिन की होनी है वे काल के
पुत्र हैं भय के देने वाले हैं॥२३॥
विदिक् पुत्रास्त्वेक तारा विदि क्षुच्च समाश्रिताः
नव संख्या श्च विपुला महा भय निवेदना २४
टी०॥ नौ तारे बड़े बड़े होते हैं वे विदिशा के पुत्र हैं और विदि
शाओं में रहते हैं महा भय के करने वाले हैं॥२४॥
उत्तरस्यां महा स्थूलो निर्म्मल श्चा परोदयी
दृष्टः करोति मरणं पश्चा दन्न समृद्धि कृत २५
उत्तर दिशा में बड़ा मोटा एक तारा है निर्मल कांति दीख
के में मृत्यु करने वाला है और पीछे अन्न का बढ़ाने-
है॥२५॥
अस्थि केतुः श्वेत चिन्हः कर्कशः क्षुद्भयावहः
दृष्टः प्राच्यां च शस्त्रा ख्य स्ता द्दक स्निग्ध श्च पापदः
टी० ॥ पूर्व दिशा में एक तारा श्वेत वर्ण चोटी वाला कठोर हो
य तो क्षुधा के भय का करने वाला है जो वही चिकना होय तो
पाप कराने वाला है॥२७॥
कपालाख्यो धूम्र शिखो दृष्टः सर्वजलापहः॥
प्राग्व्यो मार्द्ध विहारीस्या त्तथा क्षुन्मृत्यु कारकः

टी० ॥ धुआंके समान जिस की चोटी ऐसा कपाल नाम एक ता
रा पूर्व दिशा में आधे आकाश तक फैला हुआ होता है ऐ
सा हुआ जल का नाश कारी और दुर्भिक्ष तथा महा भारी का
का करने वाला है ॥२८॥

मार्गशिर मार्गः स्थूला ग्रो दृष्टस्यादरुणाप्रभः
व्योम त्रिभाग गामी चैरोद्रः क्षुद्भय कारकः २९

टी० ॥ पूर्व दिशा में और अग्नि कोण में फैला हुआ आगे से
मोटा एक तारा आकाश की तिहाई को रोके हुए और रला
लरंग भया नक होता है वह दुर्भिक्ष और भय का करने वा
ला है ॥२९॥

पश्चिमा शास्थितो यस्तच्छिखायाम्याग्रसंस्थिता
यथा यथोदयं गच्छेत्तथा दैर्घ्यं प्रयात्य सौ। ३०
संस्पृशन्वै मुनीन्सप्त ध्रुवंचाभिजितन्त था ॥
व्योमार्द्धमात्रं भित्वावै याम्येनास्तं प्रयाति
श्चाप्र यागा दवन्तीं च पुष्करारण्य मेवच
मध्य देश मुदग्भागं देविका ख्यंत थैवच
धवला ख्यो निहन्त्या शुकेतुर्दुः ख भयप्रदो
देशेष्वन्येषु दुर्भिक्षं दश मासावधि स्मृतं

टी०॥ एक तारा जैसे जैसे उदय होता आवे तैसे तैसे
चोटी बढ़ती जाती है सप्त ऋषि ध्रुव अभिजित यहां से
रा में चोटी जिसकी जाकर ठहरती है ऐसेही आधे आका
में फैल जाता है और दक्षिण की ओर छिपता है वह धवल ना
का तारा प्रयाग से लेकर पुष्कर ताईं उत्तर से ले के दक्षिण में
उज्जैन नगरी तक मध्य देशों को और देविका नदी के पास जो दे
श हैं उन को नाश करने वाला है दुःख और भय का करने वाला

और इन देशों से और जो देश हैं उन में दश महीने तक दुर्भिक्ष की करै है ॥ ३३ ॥

धूम्राकारा शिखा यस्य कृत्तिकायां समाश्रिताः
दृश्यते रश्मि केतुः स्या त्समा हानिशुभप्रदः ३४

टी० ॥ धुवां के रंग जिस की चोटी कृत्तिका नक्षत्र से लगी हुई होय सो रश्मि केतु नाम का तारा सात दिन तक दीखा हुआ सुभ कारी है ॥ ३४ ॥

त्रयो दश क्षेयाम्यादी दृश्ये धूमाह्वयश्शशी
महाभय करः सोको ज्येष्टा यां वा समाश्रितः ३५

टी० ॥ और जो रश्मि केतु नाम के तारे की शिखा हस्त नक्षत्र में तथा भरणी में वा ज्येष्ठा में लगी हुई होय तो यह तारा महा भय का कर ने वाला है ॥ ३५ ॥

सप्ताहाभ्याधिको दृष्टे दश वर्षाणि दुःखदः

टी० ॥ और रश्मि केतु नाम का तारा सात दिन से अधिक दिन दीखे तो दश वर्ष तक दुः ख का देने वाला है ॥ ३६ ॥

ग्रह पर्वत वृक्षेषु सेना गो पुष्करेषु च ॥ दिव्या ॥
न्तरिक्ष भौमा ख्यो धूम्र केतुः प्र दृश्यते ॥ या
दा तदा विना शाय प्राणिनां भवति ध्रुवम् ३७

टी० ॥ दिव्य अन्त रिक्ष भौम नाम धूम्र केतु का जो तारा है सो ग्रहों में तथा आकाश में और पृथ्वी पर और पर्वतों में वृक्षों में गो शाला में कमल की फुल वारी में जो इन में दीखे तो यह प्राणियों का नाश कर ने वाला है ॥ ३७ ॥

सकृद्या मैकदृष्ट प्रभ याया ख्यः त्सूक्ष्म तारकः
शिखा स्य सूक्ष्मा त्रजवीच पञ्च मासा न्सुभि
क्षकृत् ॥ ३८ ॥

टी०॥ एक तारा छोटा मणि नाम का है चोटी उस की पतली-और सीधी होती है एक वार एक पहर तक दीखा ऊग्या पांच ५ महीने तक सुभिक्ष का कर्त्ता है ॥ ३८॥

जल केतु र्महा स्निग्धा शिखा यस्या परोन्नता।
दृष्टः करोति शांतिंच नव मासा न्सुभिक्षकृत्॥३९

टी०॥ जल केतु नाम का तारा वड़ा चिकना होता है जिस्की शिखा पश्चिम को ऊंची होती है यह दीखा ऊग्या नौ मासतक सुभिक्ष का कर्ता है॥ ३९॥

भव केतोश्च सुस्निग्धा हरि पुच्छोपमा शिखा
सूक्ष्मैक तारा प्राग्दृष्टा लोकानां शुभदामता ४०

टी०॥ एक छोटे से तारे में घोड़े की पूंछ सरीखी चोटी निकली होय तो वह दीखा ऊग्या लों को को शुभ कर्ता है ४०

पद्म केतुर्मृणा लाभः पश्चिमा यां मदृश्यते।नि
शा मेकान्त दा सप्त वर्षाणिच सुभिक्षकृत् ४१

टी०॥ जिस तारे की चोटी पतली और श्वेत हो कमल की जड़ तंतु सरीखी सो तारा पद्म केतु नाम का है पश्चिम में एक-रात्रि दीखा ऊग्या सात वर्ष तक सुभिक्ष को करै है ॥४१॥

आवर्त्तकः सव्य शिखो निशार्द्धे संमदृश्यते।या
वन्मुहूर्त्तान् रक्ताभस्ताव न्मासान्सुभिक्षकृत् ४२

टी०॥ जिस तारे कें वांई ओर चोटी होय सो आवर्तक नाम का तारा है ये आधी रात के समय जितने मुहूर्त्त तक दीखे उतने ही महीने तक सुभिक्ष को करै है एक मुहूर्त्त दो घड़ी का-होता है॥ ४२॥

संध्या काले पश्चिमा यां शूला कारोरुणप्रभः
वियत्त्र्यंशं समाक्रम्य स्थितो यः संमदृश्य ते।

यावन्मुहूर्त्तौ स्त्ता वंति वर्षा एय शुभद: स्मृत:॥४३

टी॰ जो तारा रक्तवर्ण का आकाश के तीसरे भाग में फ़ैलता है और संध्या समय पश्चिम में मूल के आकार जितने मुहूर्त्त तक दीखे उतने ही वर्ष तक असुभ को करै है॥ ४३॥

यस्मिन् ऋक्षे स्थित: केतु राका शे संप्रदृश्यते
तादिग्व्यूह्वा न्समा हंति योत्र शोषोवदामितत्॥४४

टी॰॥ जिस नक्षत्र पर केतु आकाश में दीखे उस नक्षत्र की दिशा के देशों को नाश करै है कौन से नक्षत्र पर कौन से देश का नाश करै है॥ ४४॥

आश्विन्या मश्वकं हंति याम्ये केतु: किरातकान्।
वन्हौ कलिङ्गन्रपतीन् रोहिण्यां स्नरसेनकान
४५॥ औशीनरं म्रगे रौद्रे जलजीवाधिपे तथा।
आदित्ये प्रमकनाथंच पुष्ये च मगधाधिपम्॥४६
आशिकेशंच भोजङ्गे मघायां चङ्गनायकम्।
भगभे पौंड्रनाथंच आर्यम्णे चोज्जयिन्यकं॥४७।
कुरुक्षेत्राधिपं त्वाष्ट्रे हस्ते दण्डकनायकम्।
वाते कांवोज काश्मीरौ द्विदैवे कोशलाधिपं॥४८
मैत्रे पौंड्राधिनाथंच सार्वभौमं पुरन्दरे॥ मूले
भद्राधिनाथ ञ्च जलदैवेच काशिकम्।४९।
योधेयार्जुनचैद्यांश्च वैश्वदेवे शिवे तथा॥
वासवे पञ्चनदकं श्रवणे केकयाधिपम्।५०
वारुणे सिंहलपतिं पूर्वाभाद्रेच वङ्गपम्॥उ
हिर्बुध्न्ये नैमिषकं रेवत्यां केरलाधिपम्।५१।

टी॰॥ अश्विनी नक्षत्र पर केतु जो आकाश में होय तो अश्व का नाश करै है भरणी पर किरात देश का हानिकर कालि

* औसी नरदेश का पुनर्वसु में अश्मक देश के राजा का पुष्य पर *

ङ् देश के राजा का रोहिणी पर सूर सेन का मृगशिर आर्द्रा शतभिषा पर मगध देश के राजा का श्लेषा पर आशिष देश-के राजा का मघा नक्षत्र पर अङ्ग देश के राजा का पूर्वा फाल्गुनी पर पौंड्र देश के राजा का उत्तरा फाल्गुनी पर उज्जैन के राजा का हस्त नक्षत्र पर दण्डक देश के राजा का चित्रा पर कुरु क्षेत्र के राजा का स्वांति नक्षत्र पर कम्बोज देश का और काश्मीर का विशाखा नक्षत्र पर कोशला देश के राजा का अनुराधा पर पौंड्र देश के राजा का ज्येष्ठा पर सर्व देशोंके राजा का-मूल नक्षत्र पर भद्र देश के राजा का पूर्वा षाढ पर काशी के राजा का उत्तरा षाढ नक्षत्र पर तथा अभि जित् पर योध-देश अर्जुन देश चंदेली देश के राजा का श्रवण नक्षत्र पर केकय का देश धनिष्ठा नक्षत्र पर पंच नंद अर्थात् पंजाब देश के राजा का पूर्वा भाद्र पद पर वङ्ग देश के राजा का उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र पर नैमिष का और रेवती नक्षत्र पर केरल देश के राजा का केतु नाश करै है॥ ५१॥

यास्यां दिश्युदयं याति केतुस्तामभियोजयेत्
यतो यतः शिखा याति राजा गच्छेत्तत स्ततः॥

टी०॥ जिस दिशा में केतु उदय होता है उस दिशा के नाश-को करै है और चोटी केतु की जिस दिशा में फैलै है वहां हीके राजा का नाश करै है॥ ५२॥

पञ्चोत्तर शतं त्वे के केतूनां प्रवदन्तिच॥ ५३॥

टी०॥ और आचार्य कहते हैं कि केतु १०५ एकसौ पांच हैं वे कौन से हैं सो कहते हैं॥ ५३॥

चतुर्द्दश रवेः पुत्रा वरुणस्य दशैवतु। अग्नि
पुत्राश्चतुस्त्रिं शद्य मस्य नव कीर्त्तिताः॥ ५४॥

अष्ट दश कुवेर स्य वायोर्विंशति रीरिताः ५५॥

टी० ॥ चौदह १४ केतु सूर्य के पुत्र दश १० वरूण के पुत्र चौंतीस ३४ अग्नि के पुत्र ९ यम के पुत्र अठारह १८ कुवेर के पुत्र वीस २० वायु के पुत्र ऐसे ही १०५ केतु हैं ॥ ५५॥

आश्विने कार्तिके सूर्य्य पुत्राणा मुदयं यदि॥
मेघा जलन्न मुञ्चन्ति दुर्भिक्षंच नदा दिशेत्
५६॥चतुष्पदा विनश्यंति राजानः कलहप्रियाः॥५७

टी० ॥ कुआर और कार्तिक में चौदह १४ केतु सूर्य के पुत्र जो उदय हुए दीखें तो वर्षा नहीं होय और दुर्भिक्ष पड़े और चौपायों का नाश होय राजाओं का कलह होय ॥ ५७॥

वारुणा उदयं यान्ति श्रावणेच्चनभस्यके
स्यात्पृथ्वी जलशस्याढ्या लोका आनंदसं
॥ युताः ५८॥

टी० श्रावण भादों में दश १० वरूण के पुत्र जो उदय होंय तो वर्षा बहुत होय तृण होय लोक में आनंद होय॥ ५८॥

मार्गे मासि तथा पौषे दृश्यन्ते वह्निपुत्रकाः अ
ग्नि चौरभयन्तत्र प्रजा नाशं प्रया तिच ॥५९॥
पृथिवी भय संयुक्ता प्राणिनां व्याधिमादिशेत्।

टी०॥ अगहन तथा पौष में चौंतीस ३४ अग्नि के पुत्र उदय होंय तो अग्नि और चोर से भय होय प्रजा का नाश होय पृथिवी पर भय होय और जीवों को रोग होय॥ ६०

यम जाश्चो दयं यान्ति माघ फाल्गुणयोः कि
लं पृथ्वीभय संयुक्ता दुर्भिक्षंच समादिशेत् ६१

टी०॥ महा तथा फाल्गुन में नौ ९ यम के उदय होंय तो पृथ्वी पर भय होय और दुर्भिक्ष पड़े॥ ६१॥

चैत्र माधव मासेतु कुवेरस्यात्मजः किल ॥ या
त्युद्गमं तदा मेघा बहु वारि प्रदा मताः। धन
धान्य युता पृथ्वी प्रजा आनंद संयुता ॥६२॥

टी०॥ चैत तथा वैशाख में अठारह कुवेर के पुत्र जो उदय होंय
तो वर्षा बहुत होय अन्न धन की वृद्धि होय प्रजा में सुःख होय

वायु पुत्राः प्रदृश्यन्ते ज्येष्ठ मासे सुचौ तथा। उ
द्धता यांति वाता वै दिशाश्च रज सा वृताः॥ ६३॥
पतन्ति गिरि शृङ्गाणि निपतन्ति मही रुहाः।
चौराग्नि जनिता पीड़ा राजानः कलह प्रियाः ६४
इति श्री मयूर चित्रे केतु चारो नाम॥

प्रथमोऽध्यायः १

टी०॥ ज्येठ तथा असाढ़ में बीस २० वायु के पुत्र जो उदय हों-
य तो प्रचंड पवन चले दिशा धूल से ढक जाय पर्वतों के शिखर-
गिरैं वृक्ष उखड़ जांय चोरों से अग्नि से पीड़ा होय और राजा-
ओं में कलह होय॥ इति श्री मयूर चित्र की भाषा टीका पहला
अध्याय समाप्त॥१॥

अथ ग्रहाणां योग फल माह॥

रौद्र नक्षत्र गावेतो यदि सूर्य्य महीसुतौ। मा
सं महर्घतां यांति धान्या निस्वच्छता पुनः १

टी०॥ अब ग्रहों के योगों के फल कहते हैं आर्द्रा नक्षत्र पर
जो सूर्य्य और मंगल होंय तो एक महीने तक अन्न महगा र
है पीछे अच्छा भाव होय॥१॥

भातु केतूच भरणीं मृगं वा यदि चास्थितौ
लवणं महर्घतां याति सिंधु देशोद्भवं विदम् २

टी० भरणी तथा मृग सिर के जो सूर्य केतु दोनों होंय तौ सिं

धु देश का नोन और बिड़ नोंन महंगा होय॥२॥

बुध शुक्र मही पुत्रा भुजङ्गर्क्षे समाश्रिताः॥
नन्दन्ति लोकाः सुखिनः सुभिक्षं जनयंतिच

टी०॥ श्लेषा पर जो बुध शुक्र तथा मंगल होंय तो लोक में-
आनंद होय और अच्छा संवत् होय॥३॥

स्वाति यांति यदा भौमो रेवतीयादि भास्करः
चलचिन्ना महीपालाः प्रजा नाशं प्रयातिच४

टी०॥ स्वाति पर मंगल होय और रेवती पर सूर्य होय तो
राजा लोग चंचल होवें और प्रजा का नास होय॥४॥

अनुराधाङ्गनः शौरिर्ज्येष्टा यांच वृहस्पतिः
पश्चिमा यां तदा युद्धं प्रजा नाशं प्रयातिच५

टी०॥ अनुराधा का शनिश्चर होय और ज्येष्टा का वृस्पाति हो
य तो पश्चिम में युद्ध होय और प्रजा का नाश होय॥५॥

मूले मन्दो बुधः स्वात्यां मघायां चंद्रमायादि
संग्रहे सर्व धान्यानां लाभो भवति नान्यथा६

टी०॥ मूल का शनैश्वर होय और स्वांति पर बुध होय और म
घा पर जब चंद्रमा आवे तब सब अन्न के संग्रह करने से निश्च
य लाभ होय॥६॥

विश्वेशभे भगे मन्दः सप्तमर्क्षे यदा रविः॥
तदा जल विनाशः स्यात्प्रजानां कदनं महत्

टी०॥ उत्तरा षाढ पर अथवा पूर्वा फाल्गुनी पर शनैश्वर होय
और पुनर्वसु का सूर्य होय तो जल का नाश और प्रजा को पी
डा होय॥७॥

श्रवणर्क्षे यदा क्रूरो ग्रहः काश्चित्समाश्रितः।
अन्नं महर्घतां याति गोधूमाश्च विशेषतः८।

टी०॥ जब श्रवण पर कोई क्रूर ग्रह होय तो अन्न मंहगा होय और गेंहूं अधिक महंगा होय॥८॥

वास वर्क्षे यदा श्नोरि भूमि पुत्रेण संयुताः। नव
र्षन्ति जलं मेघाः शस्य हानिश्च जायते॥ ९॥

टी०॥ धनिष्टा का शनिश्चर और मंगल जो दोनो होंय तो वर्षा नही होय और मास तृण की हानि होय॥ ९॥

वारुणेच यदा जीवाश्चित्रायां धरणी सुतः। त
दानश्यन्ति गोधूमाः सस्यहानिर्महर्घता१०

टी०॥ शतभिषा के वृहस्पति और चित्रा के मंगल होंय तो गेंहू का नाश होय तृण की हानि और अन्न महंगा होय॥१०

भानुर्भौमो भृगुश्चैव शनि क्षेत्रे समाश्रिताः
यदा निशापति स्तत्र तदा दुर्भिक्ष तो भयम्११

टी०॥ मकर के वा कुंभ के जो सूर्य्य मंगल शुक्र ये तीनो ग्रह होंय और चंद्रमा भी इन के संग होय तो दुर्भिक्ष भय जानिये।११॥

वृषे राहुर्यदा भौमः षष्टे मासि महाभयम्
भवत्यत्र न सन्देह स्तदा दुर्भिक्ष पीडनम्१२

टी०॥ वृष के राहु और मंगल होंय तो छठे महीने में भय होय और दुर्भिक्ष से पीड़ा होय इस में सन्देह नहीं॥ १२

मिथुनर्क्षे सूर्य्यपुत्रो राहुर्वा यदिसंस्थितः
दुर्भिक्षं जायते तत्र पश्चिमायां न्रपक्षयः१३

टी०॥ मिथुन के शनिश्चर अथवा राहु होय तो दुर्भिक्ष होय पश्चिम में न्रप का क्षय होय॥ १३

रवि राहु मही पुत्राः शशि शुक्र शनैश्चराः
एक राशिं गता ह्येते तदा पृथ्वी भयाकुला।
पूर्व देशे महा पीड़ा न्रपाणां संक्षयो भवेत्

प्रजानाशो व्याधि भयं नास्मिन्कालेन संशयः १५

टी०॥ सूर्य्य राहु मंगल चंद्रमा शनिश्चर ये पांच ग्रह जो एक राशि में होंय तो पृथ्वी पर भय होय और पूर्व देश में पीड़ा और राजाओं का क्षय होय प्रजा का नाश और व्याधि से भय होय इस में सन्देह नहीं॥१५॥

सूर्य्य चन्द्रार मन्दाश्च राहु चंद्र सुता यदि॥
एक राशिं गता ह्येते दक्षिणस्यां भय प्रदः१६

टी०॥ सूर्य्य चन्द्र मंगल शनिश्चर राहु बुध ये छः ग्रह जो एक राशि पर होंय तो दक्षिण दिशा में भय होय॥१६॥

एक राशिं गता ह्येते कुजार्क शनि राहवः
शुक्रो गुरुश्च तत्रैव तदा भय विवर्द्धनाः१७
उत्तरे छत्र भङ्गस्यान्नात्र कार्या विचारणा।

टी०॥ मंगल सूर्य्य शनिश्चर राहु शुक्र बृहस्पति ये छः ग्रह जो एक राशि में होंय तो भय होय और उत्तर दिशा में छत्र भंग होय इस में कुछ सन्देह नहीं॥१७॥

रवि चंद्र कुजा जीव मन्द चंद्र सुता यदि१८
समाश्रिता ह्येक राशिं तदा पृथ्वी भयाकुला
राज्ञां नाशो व्याधि भयं प्रजानां संक्षयो भवेत्

टी०॥ सूर्य्य चन्द्र मंगल बृहस्पति शनिश्चर बुध ये छः ग्रह जो एक राशि पर होंय तो राजाओं का नाश होय व्याधि से भय अरु प्रजा का क्षय होय॥१८॥

कुजार्क जीव शुक्राश्चय दैकत्र समाश्रिताः
भयं व्याधिं प्रकुर्वन्ति सर्व धान्य महर्घताः२०

टी०॥ मंगल सूर्य बृहस्पति शुक्र ये चार ग्रह जो एक राशि पर होंय तो भय और व्याधि होय सब अन्न महंगा होय॥२०॥

कुजार्केन्दु ज्ञजी वाश्च सिंह राशिं समाश्रिता:
छत्रभंग: प्रजा नाशो भय भीताच मेदिनी २१
टी॰ मंगल सूर्य्य चंद्र बुध ब्रहस्पति ये पांच ग्रह जो सिंह राशि पर होंय तो छत्र भंग प्रजा का नाश और पृथ्वी पे भय होय॥२१॥ एक राशिं स्थिता ह्येते सौम्य शुक्रादि नाधिपा:
सर्वा धान्य महर्घत्वं मेघा: स्वल्पजलप्रदा:२२
एकनक्षत्रगा ह्येते तदा भयबिवर्द्धना:।२२॥
टी॰॥ बुध शुक्र सूर्य्य ये तीनों ग्रह जो एक राशि पर होंय-तो अन्न महंगे होंय वर्षा थोड़ी होय और जो ये तीनोंग्रह एक नक्षत्र पर होंयतो भय बढ़त होय॥२२॥
यदा जीव युतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमेस्थित:
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्न परिक्षय:२३
टी॰॥ जो ब्रहस्पति शनिश्चर एक राशि पर होंय वा ब्रहस्पति से सातवें शनि होंय तो प्रजा का नाश अन्न का क्षय होय।२३।
कर्क मीन मृग स्त्री षु शनि भौमौ यदा स्थितौ
तदा युद्धाकुला पृथ्वी धन धान्य विवर्जिता २४
टी॰॥ कर्क मीन मकर कन्या इन राशियों पर जो शनि मंगल होंय तो पृथ्वी धन और अन्न रहित होय॥२४॥
मिथुन स्त्री धनुर्मीन राशौ मन्दो यदा भवेत्
तदा भूपा विनश्यं पृथ्वी शोणित पूरिता २५
टी॰॥ मिथुन कन्या धन मीन इन राशियों पर जब शनि होय-तब राजा ओं का नाश होय और पृथ्वी रुधिर से भरै॥२५॥
रवि शुक्र सुराचार्य्या यदैकत्र समाश्रिता:
राज्य भ्रंशा: प्रजा नाशा: सर्व शस्य महर्घता २६
टी॰॥ सूर्य्य सुक ब्रहस्पति ये तीन ग्रह जब एक राशि पै आयेंत

व राज्य को बिगाड़ और प्रजा का नाश होय तृण महंगा होंय।२७

रवि भार्गव भौमाश्च राशि मेकं समाश्रिताः।
घृत तैल मसूरान्नं महर्घंति महा भयम् २७।

टी०॥ सूर्य सुक्र मंगल ये तीन ग्रह जो एक राशिपर होंय तो घी तेल मसूर ये महंगे होंय और महा भय होय॥ २७॥

सुरेज्य कवि मन्दाश्च राहु रेकत्र संस्थिताः
मेघा जलं मसुंचंति सर्व धान्य महर्घता२८

टी०॥ बृहस्पति सुक्र शनि राहु ये चार ग्रह जो एक राशिपर होंय तो वर्षा बहुत होय और अन्न महंगा होय॥ २८॥

रविज्ञ गुरु मंदाश्च राहु शुक्रा यदा स्थिताः
सुभिक्षं क्षेम मा रोग्यं तस्मिन्कालेन संशयः२९

टी०॥ सूर्य बुध बृहस्पति शनि ये चार ग्रह जो एक राशि पर होंय तो सुभिक्ष तथा कुशल होय और रोग नहीं होंय।२९

एक राशि गता ह्येते भौम भार्गव सूर्यजाः
तदा भूपा विनश्यन्ति प्रजानां संक्षयो भवेत्३०

टी०॥ मंगल सुक्र शनि ये तीन ग्रह जो एक राशि पर होंय तो राजा ओं का नाश और प्रजा का क्षय होय॥३०॥

शुक्र मंदार जीवाश्च यदैकत्र समाश्रिताः॥
मेघा जलं न मुंचान्ति दुर्भिक्षं जायते तदा३१

टी०॥ शुक्र शनि मंगल बृहस्पति ये चार ग्रह जो एक राशि पर होय तो वर्षा नहीं होय और दुर्भिक्ष पड़ै॥ ३१॥

गुरु मन्दार शुक्राश्च यदा सौम्य समान्विताः
देश भ्रंशः प्रजा नाशो वस्त्र धातु महर्घता३२

टी०॥ बृहस्पति शनि राहु शुक्र बुध ये पांच ग्रह जो एक राशि पर होंय तो देश और प्रजा का नाश होय वस्त्र और धातु ये महंगे होंय३२

दिननाथेन्दुगुरवो यदैकत्र समाश्रिताः॥ उ
त्तरस्यां दिशि भयं प्रजाः क्रन्दन्ति नित्यशः॥३३
यवान्नमुद्गवस्त्राणां संग्रहेच कृते साति।
मासे सप्तमके चैव लाभो भवति पुष्कलः॥३४

टी०॥ सूर्य चंद्र बृहस्पति ये तीन ग्रह जो एक राशि पर होंय तो उत्तर दिशा में भय होय और प्रजा में कोलाहल होय जव मूंग कपड़े इन कों खरीदे तो सातवें महीने में अच्छा लाभ होय।

रवीन्दुशुक्रेज्यशशांकपुत्रा यदैकराशौ
सहिता भवन्ति। मेघाः प्रवर्षन्ति महर्घतास्य
त्प्रजा विनाशो दिशि निर्ऋतिः स्यात्॥३५॥

टी०॥ सूर्य चंद्र शुक्र बृहस्पति बुध ये पाच ग्रह जो एक राशि पर होंय तो नैऋत दिशा में वर्षा बहुत होय और अन्न महंगा होय और प्रजा का नाश होय॥३५॥

जीवार्कशुक्रार्कसुता यदैकराशिं गता भूमि
सुतेन युक्ता भूपालपीडान्नमहर्घतास्या
त् क्रन्दन्ति लोका स्त्रभयाभितप्ताः॥३६॥

टी०॥ बृहस्पति सूर्य्य शुक्र शनि मंगल ये पांच ग्रह जो एकराशि पर होंय तो राजाओं की पीड़ा होय और शस्त्र का भय होय अन्न महंगा होय लोक में कोलाहल मचे॥३६॥

शनिराहू यदैकत्र भवेतां सहितौ यदा॥ स
र्वधान्यमहर्घत्वं राजानो भयविह्वलाः॥३७

टी० शनि राहु ये दोंनो जो एक राशि पर होंय तो सब अन्न महंगा होय और राजाओं को भय होय॥३७॥

एकराशिं गता वेतो धरापुत्राङ्गिरःसुतौ।
तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकालेन संशयः॥३८

टी०॥ मंगल बृहस्पति ये दोनों जो एक राशि पर होंय तो वर्षा काल में वर्षा नहीं होय इस में सन्देह नहीं है॥ ३८॥

मही सुतो दैत्य पुरोहितो गुरुर्यदैकनक्षत्रस
माश्रिता: ग्रहा:॥ तदा सुभिक्षञ्च यवान्न सं
ग्रहे मासे चतुर्थे विपुलो हि लाभ:॥ ३९॥

टी०॥ मंगल सुक्र बृहस्पति ये तीन ग्रह जो एक नक्षत्र पर होंय तो सुभिक्ष होय और जव अर्थात् वेजर के लेने से चौथे महीने में अच्छा लाभ होय॥ ३९॥

सप्त ग्रहा यदैकस्था गोल योगस्तदा भवेत्
दुर्भिक्षं राष्ट्र पीडा च तस्मिन् योगे न संशय:॥४०

टी०॥ सात ग्रह जो एक राशि पर होंय तो गोल योग कहाता है इस योग में देश में पीड़ा तथा दुर्भिक्ष होय इसमें सन्देह नहीं॥ ४०॥

अग्रे याति दिवा नाथ: पृष्टे च भृगु नन्दन:॥ म
ध्ये सोम सुतो याति भवत्यन्न महर्घता ४१॥

टी०॥ आगे की राशि पर सूर्य होंय पिछली राशि पर शुक्र होय सूर्य शुक्र दोंनो के बीच में जो बुध होय तो अन्न महंगा होय॥ ४१॥

गच्छतो ग्रे शुक्र शनी बुध: पृष्टं समाश्रित:
धन धान्या कुला पृथ्वी प्रजा नन्दंति सर्वशः॥

टी०॥ शुक्र शनि इन दोंनो के पीछे जो बुध होय तो पृथ्वी पर धन और अन्न की वृद्धि होय और प्रजा में सुख होय॥ ४२॥

भौमस्य पृष्टतो याति भानुश्चेज्जल शोषक:
भवत्यत्र न सन्देहो विपरीतो जल प्रद:४३

टी०॥ मंगल के पीछे जो सूर्य होय तो जल को सुखावै और वर्षा नहीं होय जो मंगल के आगे सूर्य होय तो वर्षा होय॥ ४३॥

मेषे समाश्रितो भानुर्वृषे च धरणीसुतः ॥
भव व्याधि युता लोका नृपाणां विग्रहो महान् ४४

टी०॥ मेष का सूर्य और वृष का मंगल होय तो लोक में भय और रोग होय और राजा ओं में विग्रह होय॥ ४४॥

वृषराशिं यदा याताः शनि भार्गव भूमिजाः।
दुर्भिक्षं राष्ट्रभङ्गश्च लोकानां भयमादिशेत् ४५

टी०॥ शुक्र शनि मंगल ये तीन ग्रह जो वृष राशि में होंय तो दुर्भिक्ष होय देश में फ़ोड़ तोड़ मकान आदि की होय और लोक में भय होय ४५

मेषे शनैश्चरो भानु भार्गवो भूमिजस्तथा॥
दुर्भिक्षं लोक पीडाच भवेत्पृथ्वी भयाकुला ४७

टी०॥ शनि सूर्य शुक्र मंगल ये पांच ग्रह जो मेष राशि के होंय तो दुर्भिक्ष होय और लोक में पीड़ा और पृथ्वी पर भय होय॥ ४७॥

वृषे भानुः कुजः शौरिस्तदा युद्धं समादिशेत्
न वर्षन्ति जलं मेघा दुर्भिक्षं लोक पीडनम् ४८

टी०॥ सूर्य मंगल शनिश्चर ये तीनो ग्रह जो वृष राशि पर होंय तो युद्ध होय दुर्भिक्ष और लोक में पीड़ा होय॥ ४८॥

मीन राशि गते मन्दे कर्कटस्थे वृहस्पतौ॥ तुला
राशि गते भौमे तदा दुर्भिक्ष मादिशेत्॥ ४९॥

टी०॥ मीन राशि के शनि कर्क के वृहस्पति तुला के मंगल जो होंय-तो दुर्भिक्ष पड़े॥ ४९॥

शुक्रार्कि भूमिपुत्राश्च तुला राशिं समाश्रिताः
तदा युद्धम्महा घोरं राज्ञां चैव परस्परं ५०॥

टी०॥ शुक्र शनिश्चर मंगल ये तीनों ग्रह जो तुला राशि पर होंय तो राजा ओं का आपस में घोर युद्ध होय॥ ५०॥

चंद्र भार्गव धरासुता यदा मीन राशिमुपयांति

वै तदा ॥ दुर्ल्लभम्भवति सर्वं धान्यकं वारि
दश्चन जलं प्रमुञ्चति॥ ५१॥

टी०॥ चंद्र मंगल शुक्र ये तीनों ग्रह जब मीन राशि के होंय तब सब अन्न महंगा होय और वर्षा नहीं होय॥ ५१॥

गुरु शुक्र : शनि वक्रं करोतिच यदा तदा॥
नव मे मासि गोधूम तिलं तैल महर्घता ५२

टी०॥ जो वृहस्पति सहित शनि श्चर वक्री होय तो नौ ९ महीने गेंहूं तिल तेल ये महंगे होंय॥ ५२॥

गुरु शुक्रा वेक राशिं गतौ दुर्भिक्षदुःखदौ
युद्धदौ शनि माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ ५३

टी०॥ वृहस्पति शुक्र ये जब एक राशि में होय तब दुर्भिक्ष और दुःख होय और शनि श्चर मंगल ये जब एक राशि कें होंय तब युद्ध और दुर्भिक्ष को करैं॥ ५३॥

यदा शुभग्रहः कश्च दतिचारं करोतिच॥ त
दा नृपाः क्षयं यांति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ५४

टी०॥ जब कोई शुभ ग्रह अति चार का होय तब राजा ओं का क्षय और दारुण दुर्भिक्ष होय॥ ५४॥

अतिचारं यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्करोतिच॥ त
दा नन्दन्ति राजा नो धन धान्याकुलाधरा ५५

टी०॥ जब कोई क्रूर ग्रह अति चार का होय तब राजा आदि सुखी होंय और पृथ्वी पर धन अन्न की वृद्धि होय॥ ५५॥

यदातिचार गो मन्दो वक्रीभूतोङ्गिरःसुतः
तदा नंदन्ति राजा नो धन धान्या कुला धरा ५६

टी०॥ जब शनि अति चारी होय और वृहस्पति वक्री होय तब राजा लोग सुखी होंय और पृथिवी पर धन अन्न की वृद्धि होय॥ ५६

यदा क्रूरग्रहो वक्री सुभश्चैवातिचारगः। त
दा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्॥ ५७

टी०॥ जब क्रूर ग्रह वक्री होय और सुभ ग्रह अतिचार का होयत
व दुर्भिक्ष और राजा ओं का आपस में युद्ध होंय॥ ५७॥

यस्मिन्मासे पूर्णिमायां यदा वर्षति वारिदः
गोधूम घृत धान्यानां तस्मिन्मासे महर्घता ५८

टी०॥ जिस महीने की पूर्णमासी के दिन वर्षा होय तो उस मही
ने में गेंहूं घी अन्न ये महंगे होंय॥ ५८॥

यदा मालिम्लुचे भौमो गिरा राश्यंतरे व्रजेत्।
गुरुर्वा महती वृष्टि रथवा लोकसंक्षयः ५९

टी०॥ जब मल मास में मंगल वा वृहस्पाति जो दूसरी राशि में जाय
तब वर्षा बहुत होय वा लोक का क्षय होय॥ ५९॥

कार्तिके मार्गशीर्षे च सक्रांतौ वारि वर्षणम्
तदा महर्घता पौषे सस्य वृद्धिश्च मध्यमा ६०

टी०॥ कार्तिक तथा अगहन में संक्राति के दिन जो वर्षा होय तो
पौष में अन्न महंगा होय और तृण मध्यम होंय॥ ६०॥

गुरु शुक्रार्क शशिजा यदैकत्र समाश्रिताः॥
घात योगं विजानीया त्पांसु वृष्टि स्तदा भवेत

टी०॥ वृहस्पाति शुक्र सूर्य्य ये चार ग्रह जो एक राशि के होंय तो
घात योग जानना इस में धूलि की वर्षा होय॥ ६१॥

सूर्य्याद्विधुः पञ्चम सप्तमः स्या त्क्षोणी सुतो
याति तथा रिंगेहे। दिग्दाह योगो मुनिना प्र
दिष्टः सजातउल्का पतनादि कारी॥ ६२॥

टी०॥ सूर्य से पांचवें अथवा सातवें घर चंद्रमा होय और सूर्य-
से छठें मंगल होय तो दिग्दाह योग जानना इस में अंगारे बरसें

दिग्दाह होय और अनेक उल्का पात होय ॥ ६२ ॥

उपप्लवात्सप्तमगो महीजो महीसुतात्पञ्च मगोयदा बुधः ॥ बुधाद्विधुः स्याद्यदि चतुष्टयेस्थितः स चेह भूकम्पन योगईरितः ६३

टी० ॥ राहु से सातवें मंगल होय मंगल से पांचवें बुध होय बुध से केन्द्र में जो चंद्रमा होय तो यह योग भूकंप नाम होता है ॥ ६३ ॥

मेषे वृषे कुलीरार्द्धे यदोत्पाता भवन्तिहि दक्षिणस्यांनदा युद्धं प्रजाः क्षुद्दुःख पीडिताः ६४ मिथुने चान्ननाशः स्याद्विंध्ये सिंहलके भयम् ॥ कान्यकुब्जे महापीडा कन्यकायां स्थिते रवौ ६५ नौलिन्य केच दुर्भिक्षं देशभंगोऽथ पिङ्गले। वृश्चिके च मृगे सूर्ये दुर्भिक्षं नर्मदा तटे। ६६ धनुष्यर्के विनश्यन्ति देशाकालिंजरादयः। भद्रदेशस्य नाशः स्यात्कुंभेर्केशस्य पीडनं ॥ ६७ ॥

टी० ॥ अब समय के अनुसार उत्पातों के फल कहते हैं ॥ मेष के वृष के सूर्य में तथा कर्क के अर्द्ध में सूर्य होय तब जो उत्पात होय तो दक्षिण दिशा में युद्ध होय प्रजा में दुःख और दुर्भिक्ष पड़ै तो ॥ और मिथुन के सूर्य में जो ये होय तो अन्न का नाश होय विंध्याचल के बीच और सिंहल देश में भय होय और कन्या के सूर्य में जो ये होय तो दुर्भिक्ष होय मीन के सूर्य में जो ये होंय तो देश में स्थानों की फ़ोड़ तोड़ होय और वृश्चिक मकर के सूर्य्य में जो ये होय तो नर्म्मदा नदी के तीर पर दुर्भिक्ष पडे और धन के सूर्य में जो ये होय तो कालिंजर देश आदि का नाश होय और कुंभ के सूर्य्य में जो उत्पात

होय तो भद्र देश का नाश होय और तृण थोडा होय॥ ६७॥

शुक्रस्यास्तमये वृष्टिरिज्ये चोदयमागते
सञ्चारे वनीसूनो वृष्टिर्मन्दात्रिधा मता॥ ६८

टी०॥ शुक्र के अस्त में वर्षा होय बृहस्पति के उदय मध्यम वर्षा होय मंगल शनि के संचार में उत्तम वर्षा होय इस तीन भांति से वर्षा होय।६८॥

यदा कर्कस्य संक्रांतिरथवा मकरस्य सा
भवत्यर्कार्कभौमानां वारे दुःखप्रदा मता ६९

टी०॥ आदित्य मंगल शनिश्चर इन तीन वारों में जो कर्क की अथवा मकर की संक्रांति होय तो दुःख के देनी वाली है॥ ६९॥

दिवोदितो यदागस्त्यस्तदा भयकरः स्मृतः
दुर्भिक्ष व्याधिजनको लोकानां नात्र संशयः

टी०॥ अगस्त जो दिन में उदय होय तो लोक में भयकारी है और दुर्भिक्ष को करै है इस में संशय नहीं॥६९॥

यता याति वृद्धिं सितास्यश्च पक्षस्तदा यान्ति
वृद्धिं नृपालोकसंघाः॥ समा सौख्यदा हानि
कारी तु हीना तथा कृष्ण पक्षे फलं व्यत्ययेन।

टी०॥ जब शुक्ल पक्ष में कोई तिथि वढ़ै तो राजा और प्रजा की वृद्धि होय और जो तिथि घटै न वढै तब तो सौख्यकारी हैं और जो कोई तिथि घटै तो दुःखदायक है और कृष्ण पक्ष में वढ़ै तो हानि होय और घटै तो सुख होय॥७१॥

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदशदिनात्मकः
भवल्लोकक्षयो घोरा मुण्डमालायुता मही
इति श्री मयूरचित्रे द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

टी०॥ जब तेरह दिन का पक्ष होय तब लोक का क्षय और पृथ्वी

पर रुंड मुंड परैं॥ इतिश्री मयूरचित्रे भाषा टीका यां द्वितीयऽ ध्याय समाप्त ह्रश्चा॥ २॥

अथ चैत्रादि मास फ़ल माह

अथान्यत्सं प्रवक्ष्यामि फलं योगसमुद्भवम्
मास वार तिथीनांच समस्त्रानप्रकाशनम्१

टी०॥ अब और प्रकार कहते हैं जिस से महीनों वारों और तिथियों से फ़ल जाना जाता है॥१॥

प्रतिपादि रविवारश्चैत्र मासे यदि स्यान्नभ
वति बहु वृष्टि दुःखिता लोक संघाःअम्र
त्ककिरण वारेज्ञास्फुजि द्वाकतीनां भवति
ननु धारित्री सस्य तोयाभि पूर्णा।२। वारः
स्यान्मन्द कुजयो स्तदा वृष्टिर्न जायते॥
सस्यानि न भरो हंति विग्रहं यान्ति भूमिपाः३

टी०॥ चैत्र के सुक्ल पक्ष में पड़वा के दिन जो इतवार होय तो वर्षा बहुत नहीं होय लोक में दुः ख होय और चंद्र बुध रहस्पति सुक्र ये जो चार वार होंय तो बहुत वर्षा होय त्रण बहुत होय और मंगल शनिश्चर ये वार जो होंय तो त्रण नहीं होय और राजाओं में विग्रह होय॥ ३॥

चैत्रस्य कृष्ण पक्षे वा पञ्चम्यां बुधवासरे
भौमो वक्र गति यांति घृत तैल महर्घता४
शाल्यन्नं चैव गोधूमा स्तदा याति महर्घता५

टी०॥ चैत्र के कृस्न पक्ष में पंचमी बुध वार के दिन जो मंगल वक्री होय तो घी तेल महंगा होय गेहूं चांवल महंगे होंय॥ ५॥

चैत्र मासस्य सुक्ला यां पंचम्यां यदि वर्षणाम्
वर्षा काले तदा मेघा न वर्षन्ति जलं बहु॥ ६॥

टी०॥ चैत्र सुदी पञ्चमी के दिन जो वर्षा होय तो वर्षा ऋतु में वर्षा होय बहुत नहीं होय॥ ६॥

गुरु शुक्रौ य दे कत्र चैत्र मासे व्यव स्थितौ॥
तैला ज्यु तिल सूत्रा णां संग्रहे च कृते सति ७
मास द्वये व्यतीते तु विक्रये लाभ मादिशेत् ८

टी०॥ चैत्र मास में एक राशि के बृह स्पति शुक्र होंय तो तेल घी सूत इन्हें खरीदे वो दो महीने पीछे वेचने में लाभ होय॥ ८॥

मधु मासे कृष्ण पक्षे तिथि वृद्धिर्यदा भवेत्
शुक्ल पक्ष स्य हानिः स्या दन्न हीना तदा मही ९

टी०॥ चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में तिथि की वृद्धि होय और शुक्ल पक्ष में हानि होय तो पृथवी अन्न से हीन होय॥ ९॥

चैत्रे च रवि संक्रांतौ यदि वर्षति वासवः वै
शाखे मासि वा ज्येष्ठे तदा सस्य महर्घता१०

टी०॥ चैत्र मास में संक्रान्ति के दिन जो वर्षा होय तो वैशाख में अथवा ज्येष्ट मास में तरण महंगा होय॥ १०॥

चैत्र मास स्य शुक्लायां सप्तम्यां दृश्यते घनः
उद्धता वान्ति वा ता वै अथवा निर्मला दिशः ११
तदा संग्रह णं कार्य्यं गोधूमस्य वि पश्चिता।
विक्रीते श्रावणे मासे लाभश्च त्रिगुणोभवेत् १२
पञ्चम्या मपि योगो यं चिन्तनी यो विचक्षणैः
वर्षणं च त्रयो दश्यां तदा दुर्भिक्ष तो भयम् १३

टी०॥ चैत्र सुदी साते के दिन जो मेघ दीखे तो वर्षा ऋतु में मचंड पवन चले अथवा आकाश निर्मल रहै तव गेंहू के संग्रह करने से श्रावण मास में तीन गुण लाभ होय जैसे यह सप्तमी का जोग कहा ते साही पञ्चमी का जान ना और तेरस के दिन जो वर्षा होय तो दुर्भि

क्ष से भय होय ॥१३

पञ्चमी रोहिणी युक्ता सप्तमी रौद्र संयुता
नवमी पुष्य संयुक्ता स्वाति युक्ताच पूर्णिमा १४
भवत्य त्र यदा वृष्टि स्त दा मा वृष्य वर्षणम् १५

टी॰॥ चैत्र मास की पंचमी के दिन रोहिणी होय और सप्तमी के दिन आर्द्रा होय और नवमी के दिन पुष्य होय और इनहीं दिनों में वर्षा होय तो वर्षा काल में वर्षा नहीं होय ॥१५॥

चैत्रे वा श्रावणे मासि यदा पंचार वासराः॥
राजा नक्ष क्षयं यांति मंदा दुर्भिक्ष कारकाः १६
नाशं यांति प्रजाः शुक्र रवि सौम्या विनाशकाः
चन्द्राः कल्याण जनका गुरवो जल घातकः १७

॥ टी॰॥ चैत्र मास में तथा सावन में जो पांच मंगल होंय तो राजों का क्षय होय पांच शनिश्चर होंय तो दुर्भिक्ष पड़ै पांच शुक्र होंय तो प्रजा का नाश होय पांच रवि वा पांच बुध होंय तो भी नाश के हेतु हैं पांच सोंम्वार होंय तो कुशल रहै और पांच वृहस्पति जो होंय तो जल के घाती है ॥१६॥१७॥

चैत्रे मासि तृतीयां पञ्चम्यां फाल्गुणे तथा
सप्तम्यां माघमासेच माधवे प्रथमेऽहानि १८
इति श्री मयूरचित्रे चैत्र मास फल
वर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ३

टी॰॥ चैत्र मास में तीज के दिन और फागुन में पंचमी के दिन माह में सप्तमी के दिन और वैशाख में पड़वा के दिन जो पवन चलै तो शुभ दायक है और वर्षा ऋतु में वर्षा होय ॥१८॥

इति श्री मयूर चित्र की भाषा टीका यां तीसराऽध्यायः

(समाप्तः)

माधवस्य सिते पक्षे पञ्चम्यां शनि वासरे॥
भरण्यादि चतुष्के षु हस्ते भौमस्य वासरे
पिप्पली नालिकेरञ्च ताम्रं कांस्यं च पूगकम्
रक्त वस्त्रञ्च सर्वाणि महर्घन्ति न संशयः।२॥

टी०॥ वैशाख सुदी पंचमी के दिन शनिश्चर वार वा मंगलवार होय भरणी कृत्तिका रोहिणी मृग शीर्ष हस्त ये नक्षत्र जो होंय तो पीपलि नारियल सुपारी रक्त वस्त्र तामा कांसी ये वस्तु सर्व महंगी होय॥२॥

वैशाखेच त्रयोदश्यां यदा भौमार्क वासरौ
कृष्णाच शर्करा नाग वल्ली दुर्लभतां भजेत्॥
तथा महर्घतां याति सैन्धवं रक्त चन्दनम्३

टी०॥ वैशाख की तेरस में इत वार वा मंगल वार जो होय तो पीपलि ताम्बूल खांड ये महंगी होंय और सेंधा नमक और रक्त चंदन ये वस्तु सव महंगी होंय॥ ३॥

वैशाखे शुक्ल पञ्चम्यां घनै राच्छादितं नभः॥
गर्ज्जनं वारि दृष्टिर्वा तदा सस्यस्य संग्रहः॥
कर्त्तव्यो भाद्र मासेतु विक्रीते लाभमादिशेत्४

टी०॥ वैशाख सुदी पंचमी के दिन आकाश में घों कारि अच्छा दिन होय और गर्जने लगे और वर्षा भी होय तो तृण का संग्रह कर के भादों में विक्रय से लाभ होय॥४॥

वैशाखे शुक्ल प्रति पद्दशमी वाभ्र संयुता॥
भवत्यत्र न सन्देहः प्रावृट्काले ह्यवर्षणम्५
इति श्री वैशाख मास फल कथनं चतुर्थोऽध्यायः

टी०॥ वैशाख सुदी पड़वा के दिन वा दशमी के दिन जो बादल होंय तो वर्षा काल में वर्षा नहीं होय॥५॥

इति वैशाख मास फल कथनं नाम चौथा अध्याय समाप्तः॥४॥

अथ ज्येष्ठ मास फलम्

ज्येष्ठ कृष्ण प्रादि पति भौमार्क बुध वासराः॥
यदा भवन्ति लोकानां तदा व्याधिभयं भवेत्१

टी०॥ ज्येष्टवदी पड़वा के दिन सूर्य्य मंगल बुध ये वार जो होय तो लोक में व्याधि से भय होय॥१॥

ज्येष्ट शुक्ल प्रातिपदि यदि स्यान्मन्द वासरः॥
छत्र भङ्गं प्रजा पीडां दुर्भिक्षंच तदा दिशेत्२

टी०॥ जेठ सुदी पड़वा के दिन जो शनि श्चर होय तो छत्र भंग होय और प्रजा में पीड़ा होय दुर्भिक्ष पड़ै॥२॥

ज्येष्टाद्ये बुधवार श्चेद्वर्षे त्वागामिके भयम्
तत्र चेन्मन्द वारः स्यात्तदा युद्धा कुला धरा३

टी०॥ जेठ सुदी पड़वा में जो बुध वार होय तो आगे के वर्ष में भय होय और शनि श्चर वार होय तो पृथ्वी पर युद्ध होय॥३॥

ज्येष्ठ मासे दर्श तिथौ रात्रौ मेघः प्रदृश्यते
दिवसे वाप्यना वृष्टि र्जायते नात्र संशयः४

टी०॥ जेठ वदी मावस के दिन में तथा रात्रि समय में जो मेघ दीखें तो वर्षा नहीं होय इस में सन्देह नहीं॥४॥

ज्येष्टस्य कृष्णप्रादि पद्युक्ता स्याद्भानुनायदि
वांति वाता स्तदो ग्रावै भौमेनव्याधिम्पादिशेत्

टी०॥ जेठ वदी पड़वा में जो रवि वार होय तो प्रचंड पवन चलै और मंगल होय तो व्याधि होय॥५॥

चन्द्रे पुनेरा दुर्भिक्षं गुरुणा सस्य सम्पदः॥६
भार्गवेण सुवृष्टिः स्याच्छशिनास्त्राकुला धरा
शानिनाच प्रजानाशश्छत्र भङ्गोह्य वर्षणम्॥

जायते नात्र सन्देहः कर्त्तव्यो दैवचिन्तकैः॥७॥

टी०॥ जेठ वदी पड़वा में जो बुध वार होय तो दुर्भिक्ष जान नाऔर वृहस्पति होय तो त्रण की संपत्ति होय शुक्र होय तो अच्छी वरषा होय और सोमवार जो होयतो अन्न वहुत होय जो शनि वार होय तो प्रजा का नाश होय और छत्र भंग होय तथा वर्षा नहीं होय॥७॥

ज्येष्ठ मासे न वक्षीणि रौद्रादीनि विलोक येत्
निरभ्रैर्जल संपत्तिः साभ्रैश्चैव मवर्षणम्॥८॥

टी०॥ जेठ के महीने में जो आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य इन आदि नौ नक्षत्रों में जो वादल होंय तो वर्षा नहीं होय और इन में जो वादल नहीं होय तो वर्षा होय॥८॥

ज्येष्ठस्य शुक्ल सप्तम्यां श्रूयते घन गर्ज्जितम्॥
मेघच्छन्नं नभो वापि वायुर्वहति दक्षिणः॥ति
लस्य संग्रहः कार्य्यो विक्रीते कार्तिके धनम्९

टी०॥ जेठ सुदी सप्तमी के दिन जो गरजे अथवा वादल का आडंवर वना रहै और दक्षिण की पवन चले तो तव तिल का संग्रह करै तो कार्तिक में लाभ होय॥ ९॥

श्रवणर्क्षे धनिष्ठा यां यदा मेघाः प्रतिष्ठिताः॥प्रा
वृट्काले तदा वृष्टिर्मेघो वृष्टिनिरोधकः॥१०॥

टी०॥ जेठ मास में श्रवण नक्षत्र में तथा धनिष्ठा में जो वना हुआ मेघ जाता रहै तो वर्षा काल में वरषा होय और उन जो दो नक्षत्रों में वरषै तो वरषा काल में वरषा नहीं होय॥१०॥

पूर्णिमाया ममायां वा ज्येष्ठे व्योमान्वितं घनैः॥
दिवा वा यदिवा रात्रौ तदाज्ञेय मवर्षणम्११॥
इति ज्येष्ठ मास फल कथनं नाम पंचमोऽध्यायः५

टी०॥ जेठ में पूर्णमासी के दिन वा मावस के दिन रात्रि में तथा दिन में

जो वादल होय तो वर्षा नहीं होय तो ॥१॥ इति श्री मयूरचित्रे ज्येष्ट मास फल वर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः समाप्तः॥

अथ आषाढ मास फल माह

आषाढ मासे सित पक्ष पञ्चमी रव्यादिवारेषु
यथा क्रमेण। अत्यल्प वृष्टिर्विपुलाच दृष्टि युद्ध
शुभं क्षेम सुखेच नाशः॥१॥

टी०॥ आषाढ सुदी पंचमी के दिन जो इतवार होय तो वर्षा थोड़ी होय सोम्वार होय तो वर्षा बहुत जानिये मंगल वार होय तो युद्ध होय बुधवार होय तो शुभ कहिये बृहस्पति वार होय तो कुशल रहै शुक्र होय तो सुख बढ़ै और शनिश्चर होय तो नाश होय।१

आषाढ शुक्ल पञ्चम्यां शुभवारे शुभेक्षिते॥
सम्पूर्णा निखिला धात्री धन धान्याकुला धरा२

टी०॥ आषाढ सुदी पंचमी के दिन शुभ वार होय और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि होय तो सर्वत्र पृथ्वी पर धन की अरु अन्न की वृद्धि हो

क्रूर ग्रह युते वारे लग्ने क्रूरेक्षिते तथा। दुर्भिक्षं
मरणं व्याधिश्चौर वाधा सतां सदा॥३॥

टी०॥ आषाढ सुदी पंचमी में क्रूर वार होय तथा क्रूर ग्रह पास होय लग्न पर क्रूर की दृष्टि होय तो दुर्भिक्ष पड़ै और मृत्यु रोग और व्याधि और सज्जनों को चोरों से भय होय॥३॥

आषाढ कृष्ण पक्षेचे दष्टम्यां रजनी पतिः। मेघ
मध्येच संयाति तदा पृथ्वी जला कुला॥४॥

टी०॥ आषाढ वदी पंचमी के दिन जो चंद्रमा बादल में दीखे तो वर्षा बहुत होय॥४॥

तस्यां मेव यदा रात्रौ। निर्मलः शशिलांछनः
दृश्यते छिद्र संयुक्त स्तदा वाच्यम वर्षणम्५

टी०॥ और उसी पंचमी में जो रात्रि के समय चंद्रमा निर्मल हो य और चंद्रमा में छिद्र दीखै तो वर्षा नहीं होय॥५॥

आषाढ्यां पूर्णिमा यांच यदा वृष्टिस्तु जायते
मास मेकं महर्घं स्यात्ततः पश्चात्सुभिक्षकृत्

टी०॥ आषाढ सुदी पूर्णमासी के दिन जो वर्षा होय तो एक महीने तक अन्न महंगा होय पीछे सुभिक्ष अर्थात् सस्ता होय॥६॥

आषाढे कृष्ण पक्षे तु निरभ्रे रवि मंडले॥ नच
वारि प्रवर्षन्ति प्रावृट्काले तदा घनाः॥७॥

टी०॥ आषाढ वदी में जो सूर्य्य मंडल निर्मल रहै अथवा बादल नहीं होय तो वर्षा काल में वर्षा नहीं होय॥७॥

आषाढे शुक्लपञ्चम्यां पश्चिमो यदि मारुतः
यदि वा दृश्यते चापमैन्द्रं स्याद्वारिवर्षणम्८
तदा संग्रहणं कार्य्यं सस्यानांलाभमिच्छता
विक्रीते कार्त्तिके मासि निश्चितं लाभमादिशेत्९

टी०॥ आषाढ सुदी पंचमी के दिन जो पश्चिम की पवन चलै अथवा इंद्र धनुष दीखै तो वर्षा होय जब तृण का संग्रह करै और कार्त्तिक में वेचै तो निश्चय लाभ होय॥९॥

आषाढे स्वाति नक्षत्रे सविद्युदुपवर्षणम्॥ त
दा स्यादन्न निष्पत्तिस्तोय पूर्णा वसुन्धरा॥१०

टी०॥ आषाढ मास में जो स्वाति नक्षत्र में विजली और वर्षा होय तो अन्न की संपति और वर्षा बहुत होय॥१०॥

उदये वाथ मध्याह्ने संध्यायां सूर्य्य मंडलम्
मेघच्छन्नन्न शुभदन्नवम्यांञ्च शुचौ सिते ११

टी०॥ आषाढ सुदी नवमी के दिन प्रभात समय और मध्याह्न परक्षा संध्या समय सूर्य के पास जो बादल होय तो शुभ नहीं है॥११॥

वह्नि वेदाष्ट नागेन्द्र विंशात्संख्या शुभास्करः॥
तिथि ष्वार्द्रा यदा याति कष्टदः शेष केशुभः१२

टी०॥ तीज चौथ अष्टमी नवमी चौदशि इन तिथियों में जो आर्द्रा पर सूर्य आवे तो कष्ट कारी है और शेष तिथियों में शुभ है॥१२॥

रवौ भौमे तथा मन्दे रौद्रभंयाति भास्करः॥त
दान शुभदः प्रोक्तः शुभदः शेष वासरे॥१३॥

टी० ॥ इत वार मंगल शनिश्चर इन वारों में जो आर्द्रा पर सूर्य्य आवै तो शुभ नहीं और वारों में शुभ है॥१३॥

यमाग्नी शार्द्रे मूले न्द्र पितृवारि भवे रविः॥या
त्या र्द्राभ शुभः प्रोक्तः शेषर्क्षे शुभदः स्मृतः१४

टी०॥ भरणी कृत्ति का आर्द्रा मूल ज्येष्टा श्लेषा मघा इन नक्षत्रों में जो आर्द्रा पर सूर्य्य आवे तो शुभ नहीं और नक्षत्रों में आवे तो शुभ है।१४॥ मूले गण्डे व्यतीपाते व्याघाते परिघे शिवे॥वै
धृतौ चाति गण्डेच आर्द्रा यात्य शुभो रविः१५

टी०॥ मूल गंड व्यतीपाते व्याघात परिघ शिव वैधृति अति गंड इनयोगों में जो आर्द्रा पर सूर्य आवे तो अशुभ है और में आवे तो शुभ है।१५॥

आर्द्रा प्रवेशे वृष्टिश्चे त्सार्द्धमा सम वर्षणम्१६

टी० ॥ आर्द्रा पर सूर्य्य के आते ही जो वर्षा होय तो डेढ महीने तक वर्षा नहीं होय॥१६॥

दिवार्द्रां याति चेद्भानु र्जल भक्षण कारकः॥
जग त्क्षेम करो रात्रौ वृद्ध सस्य जलप्रदः१७॥

टी०॥ दिन में जो आर्द्रा पर सूर्य आवे तो जल को शोसे है और रात्रि के समय आवै तो वर्षा होय तृण उपजे॥१७॥

आषाढ मासे खलु कृष्ण पक्षे प्रवेश नक्षत्र मुपा
गते विधौ । शुभा शुभं सर्व्व फलम्विचिन्त्य मुनि

प्रणीतं ग्रहचिन्तकेन ॥१८॥

टी०॥ आषाढ वदी में जब चंद्रमा रोहिणी पर आजावे तब वर्षा में शुभ अशुभ का विचार ज्योतिषी करै ॥१८॥

सन्ध्यायाम्पुरतो विशेच्च नगरे कृष्णः पशुर्वान्नदः
पूर्णं वृद्धि करो सिताच्च सुरभिः सौख्यप्रदा प्राणि
नांश्वेता दृष्टि विघातिनीच कपिला वातप्रदा पा
टलासस्य ध्वंसकरी तथैव शवली मध्या फले कीर्तिता

टी०॥ संध्या समय वन में से आये जो पशु है उन में से जो काला रंग का पशु आगे हो कर नगर में प्रवेश करै तो अन्नादिक की वृद्धि होय और काली गौ जो पहले प्रवेश करै तो सुख होय श्वेत गौ जो प्रवेश करै तो वृष्टि को रोकै है कपिला गौ जो प्रवेश करै तो पवन चलै और लाल धोले दो रंग की गौ जो प्रवेश करै तो तृण का नाश होय श्रौ रचित कबरी गौ जो प्रवेश करै तो मध्यम फल जानना ॥१९॥

रोहिण्यर्क्षे यदाषाढे विद्युद्धारि प्रवर्षणम् ॥
रेचितंच घनैर्व्योम तदा सर्व्वं शुभम्भवेत् ।२०

टी०॥ आषाढ मास में रोहिणी नक्षत्र के दिन जो बिजली चमकै और वर्षा होय अथवा आकाश मे घों कारि रहित होय तो सब ऋतुओं में शुभ होय ॥२०॥

न नच्च वारि पतनञ्च पूर्व्वोत्तरानिलौ ॥ तदा का
लोति घोरः स्यात्प्राणिनान्नात्र संशयः २१॥

टी०॥ जो रोहिणी नक्षत्र के दिन वर्षा नहीं होय और पूर्व अथवा उत्तर की पवन भी चलै तो ऋतु अच्छी नहीं होय किन्तु जीवों को भय देने वाली होय इस में सन्देह नहीं ॥२१॥

प्राजापत्यर्क्षगे चन्द्रे पूर्व्वोह्हे वाति मारुतः ।
शुभदाः शुभमादेश्यं वृष्टिः श्रावणभाद्रयोः

टी०॥ आषाढ़ में सोम्वार संयुक्त रोहिणी नक्षत्र में दश घड़ी-दिन चढ़े के भीतर जो पवन चलै तो शुभ दायक है और सावन भादों में वर्षा भी होय॥२२॥

अन्हस्तु पश्चिमे भागे पाश्चिमौ द्वौ प्रवर्षतः
मध्यान्हे वाति वायुश्चेन्मध्यौ मासौ जलप्रदौ२३

टी०॥ और जो रोहिनी नक्षत्र के दिन दोंनो पिछले पहरों में वर्षा होय और दुपहर के समय पवन चलै तो श्रावण भादों में वर्षा होय।२३

समस्तं दिवसं वाति यदा वायुः शुभप्रदः॥
श्रावणादिषु मासेषु तदा सम्पत्तिरुत्तमा२४

टी०॥ उसी दिन जो सारे दिन पवन चलै तौ भी शुभ है और सावन भादों आदि महीनों में उत्तम सम्पत्ति होय॥२४॥

वाति चेदशुभो वायुर्व्यत्यासेन फलम्वदेत्
तत्र यो वलवान्वायुस्तस्माद्वेद्यं शुभाशुभम्२५

टी०॥ और जो उस दिवस अशुभ पवन चलै तो पहिले कहे हुऐ शुभ फल विपरीत जानना चाहिये और जो दिवस अनेक प्रकार की पवन चलै तो जो जैसे वलवान पवन होय उसी के अनुसार फ़ल कहना२५

प्रजेशा नक्षत्र गते कलाविधौ शुभास्तु वाता ग
गनञ्च निर्म्मलम्। मृगाः खगाः शान्तदिगा
ननायदानन्दन्तिलोकाः सुखिनस्तदा च२६

टी०॥ रोहिनी नक्षत्र सोम्वार में जो शुभ पवन चलै तो और आकाश निर्मल रहै और पशु पक्षी शांत दिशा की ओर मुख को करें तौ लोक में आनन्द तथा अन्नादिक की समृद्धि होय॥ २६॥

श्वेतुप्रेतप्रवादिकालानुरूपाश्छिन्नाभिन्नावा
भिहीनातिरूक्षाः। उष्ट्राकारा वानराकारदे
हा मेघाः प्रोक्ता दुःखदा वै प्रजानाम्॥२७॥

टी०॥ विलाव प्रेत कुत्ता कौआ के आकार छिन्न भिन्न विद्युत रहित बहुत रूखे तथा ऊंट अथवा वानर की देह के समान स्वरूप के बादर प्रजा को दुःख देने वाले होते हैं॥ २७॥

माञ्जिष्ठ शुक कौशेय स्वर्ण क्रौञ्च समप्रभाः॥
अच्छिन्न मूलाः सुस्निग्धाः शुभदाः सजलाघनाः

टी०॥ तथा मंजीठ रेशमी वस्त्र तथा सुवर्ण वा कुर्च कपक्षी की समान कांति के और नहीं कटी हुई है जड़ जिन की ऐसे बहुरंग बहुत चिकने जल युक्त बादल आषाढ मास में शुभ होते हैं॥२८॥

प्राक्कोद्भूते मारुते वारि वृष्टिः पृथ्वी सस्य व्याप्ता नन्द युक्ता॥ वन्ह्युद्भूते वन्हिकोपोन्ननाशो॥ याम्यै रन्नं क्षीयते रक्ष सोत्थैः॥२८॥ पश्चाज्जाते वारि वृष्टिः समग्रा वातोद्भूते वातयुक्ताहि वृष्टिः॥ वृष्टिः सस्यं सौम्य काष्टा समुत्थे रीशोद्भूते वीते शोका जनाः स्युः॥ २९॥

टी०॥ आषाढ में पूर्व दिशा की जो पवन चले तो जल की वर्षा होय तृण उपजै सुख होय और अग्नि कोन की चलै तो अग्नि का कोप होय दक्षिण तथा नैऋत्य की पवन चलै तो अन्न का नाश होय पश्चिम की चले तो अच्छी वर्षा होय और वायव्य की चले तो पवन के साथ वरषा होय और उत्तर की पवन चलै तो वर्षा होय तृण उपजै और ईशान कोंन की चलै तो मनुष्यों का शोच दूर होय॥ २९॥

उल्का निर्घात भूकंप दिग्दाहाशनि विद्युतः
नादा मृगाणां संग्राह्यास्तथैवांबुधरास्तदा॥

टी०॥ आषाढ में उल्का पात वज्र का शब्द भौंचाल दिग्दाह गर्जनि बिजली यह विचार करना चाहिये और मेघों के स्वरूप का विचार करै और पशुओं का शब्द लखै॥३०॥

दक्षिणे न यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः
दूरस्थो निकटस्थोवा जगत्कष्टप्रदायकः ॥३१

टी०॥ जो रोहिणी नक्षत्र में चंद्रमा रोहिणी के दाहिनी ओर होकर दूर वा निकट आषाढ मास में विचरै तो जगत को कष्ट दायक जानिये॥३१॥

उत्तरस्थां यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः
सोपसर्गी तदा दृष्टिरस्पष्टमान् सुखिनो जनाः

टी०॥ जो चंद्रमा रोहिणी से उत्तर की ओर समीप हो कर जाय तो उत्पात होय और जो दूर हो कर गमन करै तो लोक में सुख होय॥३२

रोहिणी शकट मध्यगः प्राणी शोकरोग भय
दुःखदः स्मृतः ॥ शीतरश्मिमनु याति रोहि
णी कामिनां हि वशगास्तदाङ्गनाः॥ ३३॥

टी०॥ शकट के आकार जो रोहिणी है उस के बीच में जो चंद्रमा गमन करै तो शोक रोग भय दुःख इन को देने वाला है और जो रोहिणी पीछे होय और चंद्रमा आगे होय तो स्त्रियां कामियों के वश में हों‌य॥३३॥

रोहिण्याः पृष्ठतो याति यदा कुमुदिनीपतिः
कामिनीनां वशं यांति नराः कामप्रपीडिताः

टी०॥ और जो चन्द्रमा पीछे होय और रोहिणी आगे होय तो कामी पुरुष कामिनियों के वस में होंय॥३४॥

वन्हे दिशि भयमतुलं नैऋत्यां दुःखसंयुताः
लोकाः ईशानस्थे चन्द्रे सुखवाद्धल्यञ्च
मध्यमं वाते॥३५॥

टी०॥ और आषाढ में रोहिणी नक्षत्र के दिन जो रोहिणी से चन्द्रमा अग्निकोण में होय तो भय बहुत होय और नैऋत में होय तो लोक में दुःख होय और ईशान में होय तो सुख की वृद्धि होय और वायव्य में होय तो मध्यम जानना॥ ३५॥

धरणी सुतो मन्द रहित : कान्तियुतश्चंद्रमा
विनोत्पात:॥ शुभ दश्च सर्वजगतो यदि सूर्य्य
स्तीक्ष्ण रश्मि: स्यात्३६

टी०॥ उसी दिन जो शनिश्चर और मंगल करि के रहित चन्द्रमा उत्पातविना निर्मल लक्षित होय और दिन में सूर्य्य प्रचंड तपै तो वह चन्द्रमा सब संसार को शुभ दायक है॥ ३६॥

यत्फलं रोहिणी योगे तत्स्वात्या मपि चिंतयेत्

टी०॥ आषाढ मास में जो फ़ल रोहिणी से विचारा जाय वही फ़ल स्वाति नक्षत्र से भी जानना॥ ३७॥

सप्तम्यां माघ मासे यदि पतति हिमं स्वाति
नक्षत्र योगे चन्द्रार्कौ रश्मि हीनौ जलधरस
हितो वाति वात: प्रचण्ड:॥ विद्यु द्युक्त न्नभो॥
वा यदि भवति तदा सर्व्व सस्यै रूपेता पृथ्वी
स्या द्वारि पूर्णा मुदित जन पदा हृष्टलोकैश्चपु
ष्का३८॥ श्रावणे फाल्गुणे मासे चैत्रे वैशाख योर
पि आषाढे स्वाति योगो यं विचार्य्यो दैवचिंतकै:३९

टी०॥ माह महीने में स्वाति नक्षत्र युक्त सप्तमी को जो कुहिर पडे तथा बादल होय और कुहिर से सूर्य्य चंद्रमा ढक जांय और मकान आदिभी ढके ऊसे दीखें तो वर्षा ऋतु में प्रचंड पवन चलै और जो उसी दिन कुहिर नहीं पडे तो अच्छे सजल बादल होंय बिजली चमकै तो वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा हो और तृण उपजे देश में हर्ष होय लोग आनन्द में रहैं यह विचार फागुन चैत वैशाख आषाढ श्रावण इन महीनों में करना चाहिये३९

आषाढ मासस्य च पूर्णिमायां सूर्य्यास्त काले
यदि वाति वात:॥ पूर्व स्तदा सस्य युता धरि
त्री नन्दन्ति लोका: सजला घना: स्यु:॥ ४०॥

कृशानु वाते मरणं प्रजाना मन्नस्य नाशः खलु। वृष्टि नाशः॥ याम्ये मही सस्यविवर्ज्जिता स्यात् परस्परं यान्तिनृपा विनाशम्॥४१॥ नैऋत्य रो वाति यदा नु वातो न वारिदो वर्षति भूरि। वारि॥ प्रत्यक् समीरे सुखिनो नुख्या जलान्न पूर्णाच वसुन्धरा स्यात्॥४२॥ वायव्य वाते जलं ल्लाग मेस्या हृद्दस्य नाशः पवनैः प्रचंडैः सौम्येनिले धान्य जला कुला धरा नन्दंतिलोका भयदुःखवर्ज्जिताः॥४३॥ ऐशे भोन्न वृद्धिर्वहुवा रि पूरिता धराच गावो बहुदुग्ध संयुताः॥ भवं ति वृक्षाः फल पुष्प दायिनो नंन्दन्ति भूपाश्चप रस्पर न्तदा॥४४॥ इति श्री मयूर चित्रे आषा ढ मास फल कथ नं नाम षष्टो ऽध्यायः॥६॥

टी०॥ आषाढ सुदी पूर्णमासी के दिन सन्ध्या समय जो पूरव की पवन चले तो वरषा होय त्रण उपजै लोक में आनन्द होय और अग्नि कोण की पवन चले तो प्रजा का नाश और अन्न तथा वरषा का नाश होय और दक्षिण की पवन चलै तो त्रण नहीं होय और राजाओं का आपस में नाश होय और नैऋत की पवन आवै तो वरषा नहीं होय॥ और पश्चिम की पवन आवै तो सुख होय वरषा बहुत होय अन्न बहुत होय॥ और वायव्य की आवै तो जब वरषा आवै तब प्रचंड पवन बादलों को उडाय देय॥ और उत्तर की पवन आवै तो वर्षा होय अन्न उपजै लोक में आनन्द होय और दुःख सब दूर होय॥ और ईशान की पवन आवै तो अन्न की वृद्धि होय जल बहुत वरषै और दूध बहुत होय वृक्षों में फल फूल बहुत होय राजा लोक प्रसन्न होय॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥ इति श्री मयूर चित्रे भाषा टीका यां आषाढ मास फल व-

र्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः समाप्तः॥६॥

अथ श्रावण मास फल माह॥

श्रावणे शुक्ल सप्तम्यां यदि मेघः प्रवर्षति। त
दा प्रजा श्च नन्दन्ति धन धान्या कुला धरा १

टी०॥ सावन सुदी सप्तमी के दिन जो वर्षा होय तो लोक में
आनन्द होय तथा धन अन्न आदि की वृद्धि होय॥१॥

श्रावणे कृत्तिका यान्च यदि मेघः प्रवर्षति
तदा त्वे कार्णा वा पृथ्वी धन धान्यैकुलाप्रजा २

टी०॥ सावन में कृतिका नक्षत्र के दिन जो वर्षा होय तो फिर बहुत
वर्षा होय धन और अन्न से प्रजा परि पूर्ण होय॥२॥

चित्रा स्वाति विशाखा सु यदि मेघोनवर्षति।
श्रावणे च तदा पृथ्वी वारि सस्य विवर्जिता ३

टी०॥ सावन में चित्रा स्वाति विशाखा इन नक्षत्रों के दिन जो वर्षा
नहीं होय तो तृण नहीं उपजै और वर्षा नहीं होय॥३॥

सप्तम्यां श्रावणे मासे स्वाति योगेच वर्षति
निष्पत्तिः सर्व सस्या नां भवंति सुखिनोजनाः ४

टी०॥ सावन में स्वाति नक्षत्र युक्त सप्तमी को वरषा होय तो सब
प्रकार के तृण उपजै और मनुष्य सुखी होंय॥ ४॥

श्रावणे स्तं गते भानौ सप्तम्यां शुक्ल पक्ष के
दृश्यते नच पर्ज्जन्य स्त दा मेघोनैर्षति॥५॥

टी०॥ सावन सुदी सप्तमी के दिन सूर्य्य छिपे पीछे जो बादर नहीं
दीखै तो वर्षा नहीं होय॥५॥

श्रावणस्य सिते पक्षे पूर्वा भाद्र पदासु चाच
तुर्थ्यां जल पात श्चेत्पृथ्वी स्या दन्न संकुला ६

टी०॥ सावन सुदी चौथ में और पूर्वा भाद्र पदमेंजो वर्षा होयतोअन्नादिक ब-

ष्ट होय ॥ ६ ॥

श्रवणेर्क्षे पूर्णिमायां यदि मेघः प्रवर्षति। तस्मि
न्काले सुभिक्षं स्याद्धरित्री चान्न संकुला ॥ ७ ॥
इति श्री मयूर चित्रे श्रावण मास फल कथनो
नाम सप्तमोऽध्यायः ७.

टी० ॥ श्रवण नक्षत्र युक्त श्रावण सुदी पूर्णीमासी को जो वर्षा होय तो सुभिक्ष होय और अन्न की वृद्धि होय ॥ ७ ॥

इति श्री मयूर चित्रे भाषा टीका यां श्रावण मास फल कथनो नाम सातवां अध्याय ७ समाप्तं।

अथ भाद्रपद मास फलम्।

नभस्य सप्तमी कृष्णा रोहिणी मंद संयुता ॥ ॥
गुरु शुक्रार्कयुक्ता वा यव गोधूम शालयः १
हरिद्रा जीरकं सीसं पारदं हिंगु रेक्षवम्। ति
लं कस्तूरिका चैव महर्घं ति न संशयः ॥ गते
मासे तृतीये तु विक्रये लाभमादिशेत् ॥ २ ॥

टी० ॥ भादों वदी सप्तमी के दिन जो रोहिणी नक्षत्र होय और शनिश्चर वृहस्पति शुक्र रवि ये वार होंय तो जो गेंहू चांवल तिल हलदी जीरा हींग कस्तूरी खांड पारा सीसा ये वस्तु महंगी होंय इन को ले कर तीसरे महीने में बेंचै तो अच्छा लाभ होय ॥ १ ॥ २ ॥

तृतीया

नभस्यस्य यां प्रहरे च तृतीय के ॥ उत्तरस्यां
घना दृष्टा स्तदा स्युः सुखिनो जनाः ॥ अन्न
संग्रहणं कार्य्यं षष्ठे मासि महर्घता ॥ ३ ॥

टी० ॥ भादों वदी तीज के दिन तीसरे पहर जो उत्तर दिशा में बादर होंय तो जन सुखी होंय और अब अन्न का संग्रह करना योग्य है छठे महीने में महंगा होय ॥ ३ ॥

नास्य स्याष्टमी शुक्ला मूल चन्द्रार्क संयुता
तदा च पञ्च मे मासि शण सूत्र महर्घता ४

टी० ॥ भादों सुदी आठें में जो मूल नक्षत्र होय और सोम्वार होय तो पांच वे महीने में सन और सूत महंगा होय ॥ ४ ॥

यदा भाद्र पदे मासि संक्रांतौ जल वर्षणम्
तदा भवंति रोगा श्च प्राणिनां चाश्विने भयम्

टी० ॥ जो भादों में संक्रांत के दिन जो वरषा होय वो रोग होय और आसौज के महीने में जो जीवों का भय होय ॥ ५ ॥

अमा वास्या भाद्रपदे युक्ता स्याद्भानुना यदि
तदा महर्घता ज्ञेया सस्यानां देव चिन्तकैः ६

इतिश्रीमयूरचित्रे भादों मास फल वर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

टी० ॥ भादों की अमा वस जो इतवार को होय तो तृण महंगा होय ॥ इति श्री मयूर चित्र की भाषा टीका आठवां अध्याय समाप्त हुआ ॥

अथ आश्विन मास फलम्

आश्विन स्य त्रयो दश्यां शनि वारो यदा भवेत्
यदि संक्रमणं तत्र रवेस्सस्या कुला मही ॥ १ ॥

टी० ॥ जो कुआर की तेरस को शनिश्चर वार होय और संक्रांति भी होय तो तृण बढ़त होय पृथ्वी पर आनंद होय ॥ १ ॥

आश्विने शनि वक्रं स्या द्बुधोराश्यंन्तरं व्रजेत्
शुक्रश्चा स्तमयं याति तदान्न प्लाविता धरा २

टी० ॥ और जो उसी दिन शनिश्चर वक्री होय बुध दूसरी राशि में जाय तथा शुक्र का अस्त होय तो अन्नादिक बढ़त होय ॥ २ ॥

शनि राहुश्च तत्रैव संचारो जायते यदि ॥ तैल सत्र शणादीनान्तदा वाच्या महर्घता ॥ ३ ॥

टी०॥ और जो उसी दिन शनि श्चर और राहु भी राशि छोड़ै तो तेल सू
त सन ये वस्तु महंगी होंय॥३॥

आश्विने शुक्ल सप्तम्या मष्टम्यां वारि वर्षणम्
तदा सुभिक्ष मादेष्टयं राजानः शान्तविग्रहाः॥४

टी०॥ कुआर सुदी सप्तमी के दिन अथवा अष्टमी के दिन जो वरषा होय तो
सुभिक्ष होय और राजाओं का विग्रह दूर होय॥४॥

यदा चाश्वयुजे मासि दशम्यां मार्तिपात्तिथौ
अष्टम्या मंवरे मेघः सत्वरं वृष्टि कारकः ५

टी०॥ जो कुआर में पड़वा आवें दशमी इन तिथियों में वादल होंय तो शीघ्रही वरषा होय॥५॥

आदित्यास्त मये मेघाः पर्व्वता कार सन्निभाः
दृश्यन्ते जल पातः स्यात्तस्मि न्नेव दिने तदा६

इति श्री मयूरचित्रे आश्विन मास फलं नवमो
(ऽध्यायः ९)

टी०॥ जो कुआरी में संध्या समय पर्व्वत के आकार वादल होय तो
उसी दिन वर्षा होय॥६॥ इति श्री मयूरचित्रे भाषा टीकायां आश्विन मा

(स फलम् नवमो अध्यायः समाप्तं)

अथ कार्त्तिक मास फलम्

कार्त्तिके मार्ग शीर्षे वा संक्रांतौ वारि वर्षणम्
तदा समर्घता पौषे सस्य वृद्धि स्तु मध्यमा१

टी०॥ कार्तिक में तथा मार्गशिर में जो संक्राति के दिन वरषा होय तो
पौष मास में अन्न सस्ता होय॥१॥

कार्त्तिकस्य त्वमावास्या रवि वारेण संयुता
शनि भौम युता वापि सर्वलोक भयावहा२

टी०॥ कार्त्तिक में अमावस के दिन जो रवि शनिश्चर मंगल ये वार हों

य तो सब लोकों में भय होय॥ २॥

तत्र चन्द्रादि संक्रांति स्तत्समीपेऽथवा भवेत्
तदा सुख युता लोकाः सर्वं सस्य महर्घता ३

टी०॥ और जो उस दिन अथवा उस दिन के समीप सूर्य्य की जो संक्रांति होय तो लोग सुखी रहैं और तरा सब महंगा होय॥ ३॥

यदा कार्त्तिक मासेतु वारिदस्य च गर्जनम्
भवत्यन्न महर्घत्वं शस्य संपत्ति रुत्तमा॥ ४॥

टी०॥ जो कार्त्तिक में मेघ आवै और गर्जन होय तो अन्नादिक महंगा होय और तरा सस्ता होय॥ ४॥

ऊर्ज्जस्य शुक्ल द्वादश्यां रजनी निर्मला यदि
पूर्णिमा कार्त्तिका युक्ता तदा लोकाः सुखान्विताः

टी०॥ जो कार्त्तिक सुदी द्वादशी की राति निर्मल होय तो और पूनो के दिन जो कार्त्तिका होय तो सुख में सुख होय॥ ५॥

अथवा भरणी सर्वा कार्त्तिकां भवति ध्रुवम्॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं तथा रोगा भवन्तिहि ६

टी०॥ और जो पूर्णमासी के सब दिन भरणी नक्षत्र होय तो घोर महा दुर्भिक्ष पड़े और रोग होंय॥ ६॥

तस्यामेवाश्विनी योगे सस्य संपच्च मध्यमा
यदि चेद्रोहिणी योगो जंतवः क्लेश भागिनः

टी०॥ जो पूर्णिमा आश्विनी नक्षत्र का संयोग होय तो तरा मध्यम होय और जो रोहिणी नक्षत्र होय तो जीवों को क्लेश होय॥ ७॥

यदा कार्त्तिक मासेतु ग्रहणं चंद्र सूर्य्ययोः॥
निर्घातो भूमि कंपश्च तारका पतनं तथा ८
उल्कापातो रजः पातो ह्यनभ्रे जल वर्षणम्
एते चान्ये तथोत्पाताः भवंति पुरोदिताः ९

संग्रहा सर्व धान्यानां कर्त्तव्यो धन कांक्षिभिः
विक्रीते पंचमे मासि लाभश्च द्विगुणो भवेत्
इतिश्री मयूरचित्रे कार्त्तिक मास फलं दशमोऽध्यायः१०

टी०॥ जो कार्त्तिक में सूर्य चन्द्र का ग्रहण होय बिजली पड़ै तारे टूटै तो भौंचाल होय बिना बादल वर्षा होय अथवा और कोई उत्पात होय तो सब अन्नों का संग्रह करने से पांचवे महीने में दूना लाभ होय ८॥ ९॥ १०॥ इतिश्री मयूर चित्र की भाषा टीका कार्त्तिक मास फल क

(थनो नाम दशवांऽध्याय समाप्तः)

अथ मार्ग शीर्ष फ़लम्

मार्ग शीर्षे चतुर्दश्यां दर्शे वा दृश्यते यदा।
घनै राछादितो भानुस्तदा सस्य महर्घता।१

टी०॥ अगहन की चौदस वा अमावस के दिन सूर्य्य बादलों से ढका दीखै तो तृण महंगा होय॥१॥

मार्ग शुक्ल द्वितीयायां शनि वारेथ दक्षिणः
वातो वहति लोकानां तदा कष्ट प्रदायकः२

टी०॥ अगहन सुदी २ को शनिश्चर होय और दक्षिण दिशा की पवन चलै तो कष्ट देने वाली जानिये॥२॥

मार्ग शीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथि क्षयः
छत्र भङ्गं प्रजा पीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत् ३॥

टी०॥ अगहन और पौष आदि महीनों के शुक्ल पक्ष में जो तिथि घटै तो छत्रभंग प्रजा पीड़ा और दुर्भिक्ष होय॥३॥

मार्ग मासे कृष्ण पक्षे तिथि वृद्धिश्च जायते।
तदा युद्धा कुला पृथ्वी प्रजाः क्रंदंति नित्यशः

टी०॥ मागसिर के कृष्ण पक्ष में जो तिथि की वृद्धि होय तो पृथ्वी पर युद्ध होय और प्रजा में रुदन होय॥४॥

मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां नवम्या मीशादिग्यदि
दृश्यते मेघ संछन्ना स्तोकं वर्षति वारिदः ५॥

टी०॥ मार्गसिर की सप्तमी के दिन तथा नवमी के दिन जो ईशान दिशा में बादल होंय तो थोड़ी वर्षा जानिये॥ ५॥

मार्गकृष्ण चतुर्थ्यांच पित्रर्क्षे मेघदर्शनम्॥
अथवा जलपातः स्यात्तदाषाढे चवर्षणम्
समर्घताच सस्यानामादेश्यं गणकोत्तमैः ६

टी०॥ मगशिर वदी चौथ को मघा नक्षत्र के दिन जो बादल दीखे अथवा वर्षा होय तो आषाढ में वर्षा होय और तृण सस्ता होय॥ ६॥

मार्गकृष्णाष्टमी स्वातिचित्रायुक्ता भवेद्यदि
मेघाक्रांतं नभस्तस्यां दृश्यते सर्वदा यदि ७
तस्मिन्नृक्षे तदाषाढे जायते दृष्टिरुत्तमा॥
सर्वसस्ययुता पृथ्वी प्रजानंदंति नित्यशः ८

टी०॥ मगशिर वदी अष्टमी के दिन जो स्वाति वा चित्रा नक्षत्र होय और दिन भर बादल रहै तो आषाढ में वही स्वाति वा चित्रा वर्षे और तृण सब उपजै और प्रजा में आनंद होय॥ ८॥

चतुर्थी सार्पसंयुक्ता पञ्चमी पितृसंयुता
षष्ठीच भगसंयुक्ता मार्गेमासि यदा भवेत्
त्रिरात्रं महती दृष्टिराषाढे शुक्लपक्षके ६

टी०॥ मगशिर वदी चौथ पंचमी छठ ये क्रम से श्लेषा मघा पूर्वाफाल्गुनी इन नक्षत्रों करि युक्त होय तो आषाढ शुदी में तीन रात बहुत वर्षा होय॥ ६॥ अष्टमीचापिनवमी चित्रायुक्ता यदा भवेत्
वानरर्क्षेच तदाषाढे मेघा वर्षन्ति नित्यशः
इति श्रीमयूरचित्रे मार्गमासफल कथनं एकादशोऽध्यायः॥

टी०॥ मगशिर में अष्टमी नवमी के दिन जो चित्रा नक्षत्र होय तो आषाढमें

स्वांति नक्षत्र पर होय वरषा॥१०॥ इति श्री मयूर चित्र की भाषा टीका अग
(हन मास फल कथनं ग्यारहवां अध्याय समाप्त हुआ॥११॥)

अथ पौष मास फलं॥

पौषस्य च तथा कृष्णा पञ्चमी भौम संयुता
तस्यां मेघाः प्रवर्षन्ति तदा धान्या कुला मही
अतसी घृत मंजिष्ठा वर्षे यांति महर्घताम्॥१

टी०॥ पौष वदी मंगल पंचमी में जो वर्षा होय तो अन्न से पृथ्वी भरे और अलसी घी मंजीठ ये वस्तु सब महंगी होंय॥१॥

एकादश्यां नवम्याञ्च पौष मासे घना यदि
पूर्वस्यां दिशि गर्जंति तदा सस्य विनाशकः॥२

टी०॥ पौष की नवमी और एकादशी के दिन जो पूर्व दिशा में बादर होंय तो और गरजै तो त्रण का नाश होय॥२॥

पौष कृष्णस्य सप्तम्यां वारिवाहा महानिशि
यदा वर्षंति गर्जंति तदा प्रावृषि तोयदाः॥३

टी०॥ पौष वदी सप्तमी के दिन आधी रात समय पर जो वर्षा होय अरु गरजै तो वर्षा ऋतु में वर्षा होय॥३॥

पौषस्य यद्यमावस्या ज्येष्ठा नक्षत्र संयुता
तदा सस्य महर्घत्वं मूल युक्ताल्प मूल्यता

टी०॥ पौष में अमावस के दिन जो ज्येष्ठा नक्षत्र होय तो त्रण महंगा होय और जो मूल नक्षत्र होय तो सस्ता होय॥४॥

शुक्ला त्रयोदशी पौषे मन्द शुक्र कुजैर्युता
यदि वर्षति जीमूतः कार्यो गोधूम संग्रहः॥५

टी०॥ पौष सुदी तेरस में जो शनिश्चर शुक्र मंगल ये वार होंय तो और मेघ वर्षे तो गेहूं के संग्रह करने से लाभ होय॥५॥

पौष शुक्ल चतुर्थ्यां तु विधु दर्शन मुत्तमम्

तथा विद्युद्धन च्छन्नं दृष्ट मिन्द्र धनुस्तथा ६

टी०॥ पौष सुदी चौथ के दिन बिजली दीखै तो उत्तम फल होय-और गहरे बादल इन्द्र धनुष ये भी शुभ दायक है॥ ६॥

पौष मासे पूर्व भाद्रां विशेषेण निरीक्षयेत्॥
परि वेशो गर्जनं वा विद्यु द्वारि प्रदर्शनम्॥
यदि तत्र प्रजा यन्ते तदा वृष्टि रनुत्तमा ॥७॥

टी०॥ पौष में पूर्वा भाद्र पद के दिन सावधान होय कर देखै जो गर्जै तथा बरषै बिजली होय तो उत्तम बरषा होय॥ ७॥

धनुर्विद्युद्धनो वापि यद्येक मपिनो भवेत्॥
पौष मासे तदा वाच्यं वर्षा कालेह्य वर्षणं ८

टी०॥ और पौष में इन्द्र धनुष बिजली मेघ इनमें से एक भी जो पूर्वा-भाद्र पद के दिन नहीं होय तो वर्षा काल में वर्षा नहीं होय॥ ८॥

पौष मासे शुक्ल पक्षे पञ्चम्यां हिम वर्षणम्
तदा स्यात् महती वृष्टिः प्रावृट्कालेन संशयः ९

टी०॥ पौष सुदी पंचमी के दिन जो पाला पड़ै तो वर्षाकाल में बहुत वर्षा होय इसमें संदेह नहीं॥ ९॥

पौषस्य सप्तमी शुक्ला रेवती संयुता तथा।
अष्टम्यां माश्विनी योगो नवम्यां भरणी यदा १०
एवं विधेषु योगेषु सविद्युद्धन दर्शनम्। तदा
स्यान्महती वृष्टिर्वर्षा कालेन संसयः॥ ११॥

टी०॥ पौष सुदी सप्तमी को रेवती नक्षत्र पर तथा अष्टमी आश्विनी के दिन अथवा नवमी के दिन भरणी नक्षत्र में जो बिजली अर्थात् बादल होय तो बरषा काल में बरषा बहुत होय इसमें सन्देह नहीं॥ १०॥ ११॥

एकादश्यां यदा विद्यु द्दोहिस्यां जल दर्शनं
पौषे यदा तदा वृष्टिः माद्राषिस्यात्समार्थिता १२

टी०॥ रोहिणी युक्त पौष सुदी एकादशी के दिन जो वर्षा होय तो व
रषा काल में अच्छी वर्षा होय॥१२॥

पूर्णिमायां द्वितीया यां पौषे विद्युत्प्रदर्शनम्
तदा स्या दन्न संपत्ति मेंघ छन्ने तथाम्बरे १३

टी०॥ पौष में पूर्णिमासी को तथा दूज के दिन जो बिजली दीखे तो
तथा गहरे बादल होंय तो अन्न की सम्पत्ति होय॥१३॥

पौष मासे के संक्रांतौ रवि वारो यदा भवेत्
धान्य मूल्यं द्विगुणितं तदा भवति नान्यथा

टी०॥ पौष में संक्राति के दिन जो इत वार होय तो वर्त्त मान मोल
से अन्न का दूना मोल होय इस में कुछ संदेह नहीं॥१४॥

शनि वारे त्रिगुणितं भूमि पुत्रे चतुर्गुणम्
बुधभर्गवोः समत्वंच मूल्यार्द्धं शशि जीवयोः

टी०॥ और पौष में संक्राति में शनि वार होय तो तीन गुना और
भौम वार होय तो चौगुना मोल होय और सोम्वार तथा वृहस्पति होय
तो वर्त्तमान मोल से अन्न का आधा मोल हो जाय॥१५॥

अन्य मासे के संक्रांतिः शनि भानु कुजे हनि
तदा भवति दुर्भिक्षं तथा स्या द्राजविग्रहः१६

टी०॥ पौष मास से और दूसरे महीने में जो शनि श्चर मंगल वार-
रवि इन के दिनों में जो संक्राति होय तो दुर्भिक्ष होय. और राज्य में वि
ग्रह होय॥१६॥

मूल मारभ्य याम्यान्तं नभो भवति साभ्रकं
रौद्र मारभ्य वातान्तं तदा वर्षति वासवः१७

टी०॥ मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक जो बादल होंय तो
आर्द्रा नक्षत्र से लेकर स्वाति नक्षत्र तक वर्षा होय॥१७॥

धन राशि गते भानौ मूलमारभ्य चिन्तयेत्

गर्भाधानं ततो दृष्टिः षष्ठे मासे हि सार्द्धके॥१८

टी०॥ धन की संक्रांति में मूल नक्षत्र से लेकर साढ़े छः महीने त क गर्भाधान का विचार करैं सो आगे के श्लोकों में लिखे हैं॥१८॥

मूलर्क्षे हि यदा गर्भो भवत्यार्द्रां च वर्षति॥ पू
र्वाषाढे तथा दित्य मुत्तरायां तथा गुरुः॥१९
श्रवणे सार्पभं चैव वासवे पितृभन्तथा॥ वा
रुणे भाग्यभञ्चैव पूर्वाभाद्रार्यमाधिपे॥२०
हस्तो वर्षत्युत्तरायां रेवत्यां वार्द्धकिस्तथा
एनद्गर्भ समासेन मयोक्तं चिंतयेत्सुधीः॥२१

टी०॥ मूल नक्षत्र में जो गर्भ अर्थात् सजल मेघ होय तो आर्द्रा में वरषा होय और पूर्वाखाढ में जो गर्भ होय तो पुनर्वसु नक्षत्र में वर्षा होय और उत्तराखाढ नक्षत्र में जो गर्भ होय तो पुष्य नक्षत्र वर्षे श्रव ण में जो गर्भ होय तो श्लेषा वर्षे और धनिष्टा नक्षत्र में होय तो मघा वर्षे शतभिषा में होय तो पूर्वाफालगुनी वर्षे पूर्वाभाद्र नक्षत्र में हो जो गर्भ होय तो उत्तराफाल्गुनी वर्षे उत्तराभाद्र में जो होय तो हस्त व र्षे और रेवती नक्षत्र में जो होय तो चित्रा स्वांति वर्षे यह संक्षेप से गर्भका विचार किया अथवा इसी रीति में उत्तराषाढ नक्षत्र के आ गे अभिजित को गिन के विचार करना॥१९॥२०॥२१॥

तुरगर्क्षे गते भानौ यदि मेघः प्रवर्षति॥ अ॥
मूलोद्भवं तदा गर्भं नाशं स्यन्दैवचिन्तकैः॥२२
भरण्यादिस्थिते भानौ यस्मिन्मेघः वर्षति॥ त
स्मिंस्तस्मिन् गर्भ ऋक्षे गर्भनाशं वदेद्बुधः

टी०॥ अश्विनी नक्षत्र पर सूर्य्य होय तभी जो वर्षा होय तो मूलनक्ष त्र में गर्भ नहीं होय इसी भांति भरणी के सूर्य्य में जो वरषा होय तो पूर्वाखाढ में गर्भ नहीं होय ऐसे ही मृगसिर तक गर्भ का नाश वि

चारना और आर्द्रा आदि दश नक्षत्रों में जिस जिस नक्षत्र पर वर्षा होय तो मूल आदि दश नक्षत्रों में उस उस नक्षत्र में गर्भ की पुष्टता होय

पौषस्य पञ्च दश्यांच विधोर्या म्योत्तरा तडित
दृश्यते विपदा च्छन्ने छन्नै र्दृष्टि स्तदा भवेत २४

टी०॥ पौष सुदी पूनो के दिन बादल होंय और चंद्रमा से दक्षिण उत्तर में बिजली होय तो उस दिन के नक्षत्रों पर वरषा होय॥२४॥

पौषे स्वांत्यांचु सप्तम्यां यदा स्या द्वारिवर्षणं
मेघच्छन्न न्नभो वापि तदा सस्या कुलाधरा

टी०॥ पौष में सप्तमी तिथि और स्वाति नक्षत्र में वरषा होय तो त्रण बहुत होय॥ २५॥

कुहू न्तासु त्रितिथिषु पौषे गर्भः प्रजायते॥
तदो सुभिक्षमा रोग्यं श्रावणयां वारि वर्षणं२६

टी०॥ पौष मे तेरस चौदश अमावस इन तीन दिनों में जो गर्भ होय तो सुभिक्ष आरोग्य होय और सावन की पूनो पर वरषा होय॥२६॥

पौषस्य कृष्ण पञ्च म्यां नभो विमल ता रकम्
स्वात्यांतु षार पातः स्या च्छ्रा वणे तत्र वर्षणम्
प्रजा भवंति मुदिता सर्व सस्य महर्घता २७

टी०॥ पौष वदी पंचमी के दिन तारे निर्मल रहैं और स्वांति नक्षत्र में कुहर पड़ै तो श्रावण मास में वर्षा होय और प्रजा में हर्ष होय पैर त्रण महंगा होय॥ २७॥

अमावस्या सहस्यस्य शनि सूर्यार्कवासरे॥
यदि स्या द्भय मा देश्यं तदा सस्य महर्घता२८

टी०॥ पौष वदी अमा वस जो शनिश्चर रवि मंगल इन वारों में जो होय तो भय उपजै और त्रण महंगा होय॥ २८॥

पौष मास्य कुहूं वा सप्तम्यां यदि वर्षणम्

मावस्काले तदा तत्र समर्घं वारि वर्षणम् ॥२९

टी०॥ पौष वदी अमावस के दिन तथा सप्तमी के दिन जो वरषै तो वर्षा काल में वर्षा होय॥ २९॥

सुक्लायां यदि सप्तम्यां घनैराच्छादितन्नभः
तदास्या च्छ्रावणे मासि सप्तम्यांवृष्टिरुत्तमा

इति श्री मयूरचित्रे पौष मास फल वर्णनोना
(म द्वादशोऽध्यायः१२)

टी०॥ पौष सुदी सप्तमी के दिन जो बादल होंय तो सावन सुदी सप्तमी के दिन उत्तम वर्षा होय॥ ३०॥ इति श्री मयूरचित्र की भाषा टीका यां पौष मास फलं बारहवां अध्याय समाप्तः ॥१२॥

अथ माघ मास फलम्

माघ सुक्ल द्वितीयाच त्रतीया सुक्र संयुता
यदा स्यान्मंद संयुक्ता तदा युद्धाकुलाधरा१

टी०॥ माघसुदी दूज तीज जो सुक्रवार को होंय तो पृथ्वी पै युद्ध होय॥१

यदि स्याद्गुरु संयुक्ता तदा सस्याकुलाधरा
राजा नस्तत्र सुखिनः प्रजा नंदंति नित्यशः२

टी०॥ माघ सुदी दूज वृहस्पति वार जो होय तो धरण बद्धन होय और राजा लोग सुखी होंय प्रजा में आनंद होय ॥२॥

षष्ठीच पञ्चमी चैव कृष्णा माघस्य सप्तमी
सुक्रार्क रवि संयुक्ता तदा युद्धाकुलाधरा३

टी०॥ माघ वदी पंचमी छठ सप्तमी जो सुक्र शनि रवि इन वारों हों य तो पृथ्वी पर युद्ध होय॥ ३॥

एते योगा यदा माघे न भवन्ति कदाचन।भा
द्र मासेच गोधूम मुद्ग धान्य महर्घता॥४॥

टी०॥ जो माघ में पहले कहे हुए योग नहीं होंय तो भादों के मही

रे में गेंहू मूंग अन्न यह वस्तु महंगे होंय॥ ४॥

माघ मासे त्रयोदश्यां यदास्याद्धिमवर्षणम्
पृथ्वी नदान्न बहुला प्रजाः सुखसमन्विताः॥५

टी०॥ माघ के महीने में जो तेरस के दिन कुहिर पड़ै तो पृथ्वी पर अन्नादिक बहुत होय और प्रजा में सुख होय॥ ५॥

हिमन्न पतितं माघे ज्येष्ठे मूलेच वर्षति॥
नार्द्रायां पतितं वारि कालो दुष्टस्तदा मतः

टी०॥ और जो माघ कुहर पड़ै तो और ज्येष्टा तथा मूल नक्षत्र में वर्षा होय आर्द्रा में वर्षा नहीं होय तो समय दुष्ट जानना चाहिये।६।

माघमासे च संक्रान्तौ यदि वर्षति वारिदः॥
तदा पृथ्वी तु सस्याढ्या धेनवो बहुदुग्धदाः

टी०॥ माघ में संक्रान्ति के दिन जो वर्षा होय तो खेती बहुत होय और गौ बहुत दूध देने वाली होंय॥७॥

माघ शुक्ल प्रति पदि बुधवारो यदा भवेत्॥
अन्नं महर्घतां याति वर्षे त्वागामिके भयम्८

टी०॥ माघ सुदी पड़वा के दिन जो बुधवार होय तो अन्न महंगा होय और आगे के वर्ष में भय होय॥८॥

पञ्चार्काः पञ्च वा भौमाः पंच वा मन्द वासराः
दुर्भिक्षं भय मादेश्यं तदा शेषाः शुभावहाः९

टी०॥ माघ के महीने में जो पांच इतवार वा पांच मंगलवार वा पांच शनिश्चर वार होंय तो दुर्भिक्ष जानना और भय होय और बाक़ी वार सब शुभ हैं॥ ९॥

येषु येषु च मासेषु तस्य वृद्धिः प्रजापते॥ सुभि
क्षं क्षेम मारोग्यन्तेषु ज्ञेयं विचक्षणैः॥१०

टी०॥ और जिस महीने में पांच शुभ वार होंय तो उसी महीने में सु

मिक्ष होय और कुशल तथा आरोग्य रहै ॥ १० ॥

माघमासस्य प्रतिपत्स वाता मेघवर्जिता ॥
यदा यातिमहर्घत्वं तैलद्रव्यं सुगंधकम् ११

टी० ॥ माघ में पड़वा के दिन पवन चलै और मेघ न होय तो तेल औ र सुगन्ध वस्तु सब महंगी होय ॥ ११ ॥

द्वितीया मेघसंयुक्ता धनधान्यविवृद्धिदा १२

टी० ॥ माघ में दूज के दिन जो बादल होय तो धन और अन्नादिक की वृद्धि होय ॥ १२ ॥

माघमासे तृतीयां गर्जनञ्च जलंविना ॥
संग्रह स्तत्र कर्त्तव्यो गोधूमस्ययवस्यच १३

टी० ॥ माघ में तीज के दिन बादल गर्जै और वर्षा न होय तो जव गेहूं इन का संग्रह करने से लाभ होय ॥ १३ ॥

चतुर्थी जल संयुक्ता नालिकेरार्थं दामता १४

टी० ॥ माघ में चतुर्थी के दिन जल वर्षै तो नारियल से लाभ होय ॥ १४ ॥

पञ्चमी मेघसंयुक्ता यदा जलविवर्ज्जिता ॥ त
दा भाद्रपदे मासि स्वल्पवृष्टिश्च जायते ॥ १५ ॥

टी० ॥ माघ के महीने में पंचमी के दिन जो बादल होय और जल नहीं बर्षै तो भादों में थोड़ी वर्षा होय ॥ १५ ॥

षष्ठ्यां निरभ्रंगगनं दिशश्च विमला यदा ॥ सं
ग्रह स्तत्र कर्त्तव्यः कार्पासस्य हितेक्षिणा १६

टी० ॥ जो माघ में छठ के दिन बादल न होय दिशा और आकाश जो निर्मल रहै तो कपास का संग्रह करै ॥ १६ ॥

सप्तमी सौम संयुक्ता राजविग्रह कारिका ॥
मासे धवल पक्षस्य महा दुर्भिक्षदायिका १८

टी० ॥ माघ सुदी सप्तमी जो सौम्वार की होय तो राज्य विग्रह और महा

दुर्भिक्ष अर्थात् अकाल को करै है॥१७॥

आदित्योदय वेलायां यदा स्यादष्टमी ति
थिः॥ तदा रौद्रगते सूर्ये श्रावणे नाहि वर्षति१८

टी०॥ माघ में सूर्य्य उदय के समय जब अष्टमी होय तभी जो आर्द्रा पर सूर्य आवे तो श्रावण में वर्षा नहीं होय॥१८॥

नवम्यां चंद्रविंबस्य परिवेषश्च जायते॥ त
दाषाढे महा दृष्टिः पूर्वं धान्य महर्घता१९

टी०॥ माघ सुदी नवमी के दिन जो चन्द्रमा के आस पास मंडल होय तो पहिलें अन्न महंगा होय और पीछे आषाढ के महीने में वरषा बहुत होय॥१९॥

शुक्ल पक्षस्य सप्तम्यां माघे व्योमाचितं घनैः
पुरो वा तो यको वेरिवारुण्यां चंचला यदि
हिमं पतित वा न च वांति वातास्त दोद्धताः
तदा सुभिक्षमादेश्यं तस्मिन्देशे विचक्षणैः

टी०॥ माघ सुदी सप्तमी के दिन जो गाढे बादल होंय और पुरवाई तथा उत्तर की पवन चलै तो और पश्चिम की ओर बिजली होय अथवा हिम वरषै तो प्रचंड पवन चलै तब भी उस देश में सुभिक्ष होय॥२०॥ २१॥

माघ मासे तपस्ये वा चैत्रा षाढेच माधवे स
प्तम्यां स्वाति युक्तायां लक्ष पंच शुभ प्रदम्२२

टी०॥ चैत्र वैशाख असाढ माघ फागुन इन महीनों में जो सप्तमी के दिन स्वाति नक्षत्र होय और सुभही लक्षण होंय तो सुभ प्रद अर्थात सुभ होय॥२२॥

माघ मासस्य नवमी दशम्येकादशी तथा
विद्यु द्वात समा युक्ता तदा बहुजलप्रदा२३

टी०॥ माघ सुदी नवमी वा दशमी एकादशी के दिन जो पवन चलै और बिजली चमकैं तो वर्षा बहुत होय ॥२३॥

कृष्णा यांच त्रयो दश्यां चतुर्दश्यामथापिवा
पूर्व्वस्यां सुद्गता मेघा स्तदा षाढे च वर्षणम्२४

टी०॥ माघ सुदी तेरस तथा चौदश के दिन जो पूरव दिशा में बादल होंय तो आषाढ में वर्षा होय॥२४॥

पञ्चमी कृष्ण पक्षस्य माघ मासस्य षष्टिका
सप्तमी शुक्र मन्दे न्दु युक्तासस्यर्द्धिदामता२५

टी०॥ माघ वदी पंचमी छठ सप्तमी जो शुक्र शनि श्चर सोमवार इन करि युक्त होय तो खेती बहुत होय॥२५॥

एते योगा यदा माघे न भवंति तदा खलु॥ गो
धूमाः शालयो मुद्गा भाद्रे यांति महर्घताम्२६

टी० माघ में कहे हुए योग नहीं होय तो गेहूं मूंग चांवल आदि ये वस्तु भादों के महीने में महंगी होय॥२६॥

माघ मासे त्रयोदश्यां हि मे राष्ट्रादि तन्नभः॥
यदा तदा महर्घाति ब्रीहयो नात्र संशयः२७

टी०॥ माघ में त्रयोदशी के दिन जो कुहर पड़े और आकाश ढक जाय तो अन्न सस्ता होय इस में संसय नहीं॥२७॥

अमावास्या यदा छन्ना तदा भाद्रे जलं भवेत्।
पूर्णिमासी घन च्छन्ना षष्टे मासि महर्घता२८
इति श्री मयूर चित्रे माघ मास फल विचा
(रो नाम त्रयो दशोऽध्यायः१३)

टी०॥ माघ की अमावस के दिन जो बादल होय तो भादों में वरषा होय और पूर्णमासी के दिन जो बादल होंय तो छटे महीने में वस्तु महंगी होंय॥२८॥ इति श्री मयूर चित्र की भाषा टीकायां माघमा

(स फलं कथनो नाम तेरहवां अध्याय समाप्तः)

अथ फाल्गुन मास फलं

यदा वक्र गती स्या तां शनि भौमौ तपस्यके
मासे वाद्या शुतिथिषु त्रिषु सस्यस्य संग्रहः
कार्य्यो विपश्चिता तत्र पक्षांतेस्याच्चतुर्गुणम् १

टी०॥ फागुन में मंगल शनिश्चर दोनो जो पड़वा दूज तीज इन तिथियों में जो वक्री होंय तो त्रण का संग्रह करे और पंद्रहवे दिन पीछे वेचने में चौगुना लाभ होय॥ १॥

फाल्गुणेच गुरौ रस्तम्वक्रम्वा यदि जायते।
तदा सस्य महर्घत्वं शनि र्वा वक्रतां व्रजेत् २

टी०॥ फागुन में जो ब्रहस्पति अस्त होय अथवा वक्री होयतो अथवा शनिश्चर वक्री होय तो त्रण महंगा होय॥२॥

यदा फाल्गुन के मासे प्रयात्यस्तंभ्रगोःसुतः
धन्यादि सर्व सस्यानां तदा वाच्या महर्घता३

टी०॥ जो फागुन के महीने में शुक्र अस्त होय तो अन्न और त्रण सब महंगा होय॥ ३॥

तदा दुर्भिक्ष देशयं षण्मासं दैव चिंतकैः४

टी०॥ और शुक्र के अस्त से लेकर छः महीने तक ज्योतिषीयों करि दुर्भिक्ष कहना चाहिये॥ ४॥

सप्तमी कृत्तिका युक्ता फाल्गुनस्य सिता यदा
तदा भाद्र पदे मासि कुहूां मेघः प्रवर्षति ५

टी०॥ फागुन सुदी सप्तमी कृत्तिका नक्षत्र के दिन जो बादल हों य तो भादों की अमावस के दिन वरषा होय॥५॥

विना वातं घने प्छन्नं विपन्न स्यांतिथौ यदा॥
विद्यु द्धाजायते तत्र तदा सस्या हता मही६

टी०॥ और जो उस तिथि में बादल अथवा बिजली होय और पवन च
लै तो पृथिवी पर तृण बहुत होय॥ ६॥

फाल्गुनस्य त्रयोदश्यां मष्टम्यां वृष्टिरुत्तमा॥
यदि स्याच्छुसितायां वै तदा लोका निरामया:७

टी०॥ फागुन सुदी अष्टमी तथा त्रयोदशी के दिन जो वरषा होय
तो मनुष्य निरोगे रहैं॥७॥

याति पच्छुक्लके पक्षस्य वृद्धिं याति तदा शुभम्
तृतीया दुःखदा प्रोक्ता चतुर्दश्य ष्टमी तथा८

टी०॥ फागुन सुदी पड़वा की जो वृद्धि होय तो सुभहै और तृती
या जो बढ़ै तो दुख दायकहै और चौथ तथा अष्टमी बढ़ी हुई भी तृ
तीया सी ही जाननी चाहिये॥ ८॥

फाल्गुने मीन संक्रान्तौ भानु वारे तिथि क्षय:
भौम शन्योश्च दुर्भिक्षं सिते ज्येन्दो सुभिक्षकं९

टी०॥ फागुन में मीन की संक्रान्ति में जो इतवार मंगल शनिश्चर
इन वारों में तिथि का क्षय होय तो सुभिक्ष होय और सोम बृह-
स्पति शुक्र इन वारों में जो तिथि क्षय होय तो दुर्भिक्ष पड़ै॥ ९॥

माघे हिमं न पतितं वातो वाति न फाल्गुने
नचव्यो मान्वितं चैत्रे घने न पतनं यदि १०॥
करकाणान्तु वैशाखे शुक्ले चरण्डा तपो भवेत्
तदाति तुच्छ वृष्टि: स्या व्या वृष्टकालेन संशय:

इति श्री मयूर चित्रे नारदोक्ते फालगुन मा
स फल वर्णनो नाम चतुर्दशो ऽध्याय:१४॥

टी०॥ माघ में शीत नहीं पड़ै और फागुन में पवन नहीं चलै और
चैत में बादल नहीं होय और वैशाख में ओले न पड़ै और ज्येष्ट
में गर्मी नहीं होय तो वरषा काल में वर्षा नहीं होय॥ १०॥ ११॥

इति श्री मयूरचित्र की भाषा टीका यां फागुन मास फल
(कथनं नाम चौदहवां अध्यायः समाप्तः)

सर्व्व मासे पूर्णिमायां भूमिकंपो यदा भवेत्
तद्दिने वृष्टिदः प्रोक्त इतरासु न वृष्टिदः॥१

टी०॥ किसी महीने की पूर्णिमासी के दिन जो भूचाल होयतो वह उस दिन वृष्टि को करै है और बाकी दिनों में नहीं॥१॥

उल्का पातो वज्र पातः परिधिश्शशि सूर्ययोः
धूम्र केतुः शक्रचापो ग्रहणं बहुधा यदा२
तदा सकल वस्तूनां जायतेच महर्घता३

टी०॥ जो तारे टूटैं और बिजली पडै अथवा सूर्य्य चन्द्रमा मंडल होय और धूमल तारे इंद्र धनुष ग्रहण बहुत से होय तो सबही वस्तु पृथ्वी पर निश्चय महंगी होंय॥२॥३॥ इति सर्व मास फलम्

यस्मिन् वर्षेच पक्षे शशिनितनु गते पाप॥ राशि स्थिते वा केन्द्रे प्राप्ते मधुर सुदकं सौम्य योगे प्रदृष्टे॥ पापैर्दृष्टे नच बहु जलं पश्र कालेपि तद्वैर्वीच्यं सर्व्वं फलमविकलञ्च। न्द्रव द्भार्गवेपि॥१

टी०॥ जिस संवत् की लग्न कुंडली में लग्न में अथवा केंद्र में जो चंद्रमा होय और सुभ ग्रह कारि कै साहित होय तथा सुभ ग्रह की दृष्टि होय तो अच्छी वर्षा होय और पाप स्थान में केन्द्र से और ही भाव में होय अरु पाप ग्रह पास होय तथा सुभ ग्रह की दृष्टि होय तो वर्षा नहीं होय यही विचार शुक्र से भी जानना और यही विचार प्रश्न कुंडली में भी करना॥१॥

प्रश्न पृच्छकस्य श्रातिसलिल मितिवा श्रूयतेस स्यो वा पृच्छा काले सलिल मिति श्रूयते सम्यु

खोवा॥ दृष्टः कूपो विमल सलिलञ्चेद्र देहा
रिवृष्टिमेनत्सर्व्वम्भवतिच फलंव्यत्ययेव्यत्ययेन२

टी०॥ प्रश्न के समय में पूछने वाला जल का स्पर्श करै अथवा उस समय में जल शब्द सुनने में आवैं अथवा जल की बनी हुई वस्तु तथा कुआ वावडी इन पर दृष्टि जाय तो वरषा कहे और जो इस से विपरीत लक्षण होंय तो वर्षा का अभाव कहे॥२॥

प्रातः काले पीतराश्मि र्दुनरीक्ष्यो भवे द्रविः॥
स्निग्धवै दूर्य्य कांति श्चेन्मेघो वृष्टिप्रदःस्मृतः

टी०॥ प्रभात समय जो सूर्य में तेजी होय पीली घाम और बादल में चिकने श्याम वर्ण होय तो शीघ्र वृष्टि होय।३।

प्रावृट्काले यदा सूर्यो मध्यान्हे दुःसहो भवेत्
तद्दिने वृष्टिदः प्रोक्तो द्रुतस्वर्णसमप्रभः४

टी०॥ जो बरषा काल में दुपहर के समय सूर्य्य की किरण मंद होंय और कांति गलाये हुऐ स्वर्ण की सी होय तो उसी दिन शीघ्र वृष्टि होय॥४॥

यदा जलस्थे विरसञ्जल दा गोत्र सन्निभाः
दिशश्च विमलाः सर्व्वाः काकाण्डाभन्नभ
स्तलम्॥५॥ नयदा वाति पवन श्छन्नंस्या
न्तिऋषोदयः॥ शब्दं कुर्वंति मंडूकास्तदा
वृष्टिरनुत्तमा॥६॥ नखैर्लिखन्ति मार्जा।
राः॥ पृथिवीञ्च यदा भृशम्॥ लोहानाञ्च
लानिचयो विस्र गन्धो यदा भवेत्७ सेतुं कु
र्वन्ति रथ्यायां शिशवो मिलिना यदा। शुद्धा
ञ्जनाभा गिरयो वाष्पमुद्रित कन्दराः॥८॥
पिपीलिकायदा एडा निग्रही त्वोच्चयान्ति

च॥ सर्पा वृक्षं समारोहन्ति तदा वृष्टिजलप्रदाः
॥ ९ ॥ गावः सूर्य्यं निरीक्षन्ते कृकलासगणा
स्तथा ॥ गृहान्निर्गच्छन्ति पशवो निर्गमं कुक्कु
रास्तथा ॥ १० ॥ लता ऊर्ध्वमुखाः सर्वा स्नानं
कुर्वंति पक्षिणः । पांसुभिश्च तृणाग्राणि सेवते
वा सरीसृपाः ११ वियन्ति तीरि पक्षाभ माति
पक्ष निभास्तथा । तदा वृष्टिः समादेश्या नि
श्चितं दैवचिन्तकैः १२ इति श्री मयूरचित्रे
नाम्नि नारद मुनि विरचिते वृष्टि लक्षणानि
पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

टी० ॥ जल विरस होय और पर्वत से बादल होंय और दिशा
निर्मल होंय कौआ के अंडे के समान आकाश होय और पवन बन्द
हो जाय और मछली पृथ्वी में जा लगें मेंढ़के बोलने लगें तो वर्षा
तुरन्त होय और बिल्ली कुत्ते पंजों से पृथ्वी को खोदें और लोहे के मैल
में दुर्गंधि आवे मारग में बालक सेतु बांधे और अंजन के समान प
र्वत हो जायं और पर्वतों की गुफा पसीज ने लगें और चेंटी अंडों को
लेकर ऊपर को चढ़ें और सर्प वृक्ष पर चढ़ें तो बहुत वर्षा जानिये
और गो सूर्य के सन्मुख और गिर गिट सूरज को देखें और पशु घर
से बाहर जंगल में जाने की इच्छा नहीं करै और कुत्ते भी बाहर न
निकलने चाहैं और वृक्षों की शाखें ऊंची खडी हुई हो जायं
और जीव जन्तु पक्षी धूलि में स्नान करें और वृक्षों की शाखाओं के
अग्र भाग में कृमि अर्थात् कीड़े फूलें और तीतर पंखी बादल होंय
अथवा भौरे के पंख सरीखे बादल हो जांय तो निश्चय वर्षा होय ये
सब लक्षण शीघ्र वर्षा होने के कहे । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२

इति श्री मयूर चित्र की भाषा टीका यां वर्षा लक्षण पंद्रहवां

(अध्यायः समाप्तः १५)

माद्रक्काले शीत रश्मि र्यदास्याच्छुक्रादस्ते सौम्य दृष्टो यदा स्यात्॥ वृद्धि स्थाने स प्तमे च त्रिकोणे वृष्टिर्वाच्या दैववि‌द्भिः पुराणैः १

टी०॥ वर्षा काल में शुक्र से चौथे पांच वे सातवें त्रिकोण में जोच न्द्रमा होय तो तथा प्रश्न से इन स्थानों में होय तो वर्षा उत्तम होय

शुभाश्च जल राशि स्थाः केन्द्रगाः स्वीयगेहगाः जल मदाः सिते पक्षे विधौ चोद यगे जले ।२॥

टी०॥ जो शुभ ग्रह जल राशी में होय और केन्द्र के ग्रह स्वग्र ही होंय और चन्द्रमा का उदय जल राशी में जो होय तो और शुक्ल पक्ष होय वो वरषा जानिये॥ २॥

सप्तम गौ रवि चन्द्रौ सित रवि जो रसातलेल ग्नात्। माद्रक्काले जलदो भवतो वा द्वितीय। सहज स्थो॥ ३॥

टी०॥ वरषा काल से लग्न से जो सात ये सूर्य चन्द्रमा होंयश्री र चौथे शुक्र शनिश्चर होंय अथवा दूसरे तीसरे होय तो भी वर षा होय॥ ३॥

प्रश्नलग्ना त्तोय राशिर्यदि वित्त त्‍तृतीयगः॥ तोय संज्ञो ग्रह स्तत्र भवत्य भ्रंजलमदम् ४

टी०॥ प्रश्न लग्न से दूसरे वा तीसरे जल राशि होय और उनमें जल ग्रह बैठा होय तो वरषा होय॥ ४॥

समा गमे सित वुधयो स्तथाच गुरु सुक्रयोः तथैव जीव वुध यो र्दृष्टिः स्यान्नात्र संशयः ५

टी०॥ जो शुक्र वुध एक राशि के होंय तथा वृहस्पति सुक्र अथवा वुध वृहस्पति एक घर में होंय तो निश्चय वर्षा होय इसमें कुछ संदे

ह नहीं करना॥ ५॥

यदा भवन्ति सूर्य्यस्य ग्रहाः पृष्ठ वले विनाः॥
पुर तोवा यदा यान्ति तदात्वे कार्णवा मही। ६॥

टी०॥ जो सूर्य के पीछे आगे अथवा ग्रह होय तो वरषा वहुत होयई

बुधभृग्वो र्मध्य ग तः सूर्य्यश्चेज्जलशोषकः
तयो र्यदि समी पस्थ स्तदा वहु जलं प्रदः॥७॥

टी०॥ बुध शुक्र के वीच में जो सूर्य होय तो जल को शोख जाय और जो पास ही होय तो वहुत जल होय॥७॥

अग्रे याति तदा भौमः पश्चाच्चलति भास्करः
तत्र वृष्टिर्न विपुला जाय ते नात्र संशयः॥८॥
इति सद्यो वृष्टि ग्रहाः॥

टी०॥ जो आगे मंगल होय और पीछे सूर्य्य होय तो वरषा अच्छी नहीं होय ये शीघ्र वृष्टि होने के योग कहे इस में कुछ संशय नहीं ८

दर्शो वै पोष मासे भवति यदि वला राति नक्ष त्र युक्तो देशे सस्य म्महर्घम्भ वति च तदा मू ल युक्तेऽर्द्ध मौल्यम॥ पूर्व्वी षाढा युतश्चेत् द्विगुण मथ युतो वैश्व देवो न कुर्य्या दुर्भिक्षं राष्ट्र भङ्ग ञ्जन पद मरणन्नर्त्त येत्को पिशाचन्

टी०॥ पौष वदी अमा वस के दिन जो ज्येष्ठा नक्षत्र होय तो तेण महंगा होय और मूल नक्षत्र होय तो आधा मोल होय और पूर्वा षाढ नक्षत्र होय तो दूना मोल होय और धनिष्ठा नक्षत्र होय तो दुर्भिक्ष पड़े और मौत वहुत होय भूत पिशाच नाचैं॥ ९॥

यदि भवति शशां के मण्डलचण्ड रश्मौ
रवि शनि कुज वारे पौष मासे त्वमायाम्
द्विगुणा दहन वेदे स्तुल्य ते रत्नमौल्यम्बुध

प्रति पद संयुक्ता बुधसदा दुर्भिक्ष कारिका
ज्येष्ट मासे विशेषेण वर्षे त्वा गामिके फलं।

टी०॥ सब महीनों में बुध वारी पड़वा दुर्भिक्ष को करै है और जो ज्येष्ट में पड़वा होय तो आगे के वरस में विशेषता से दुर्भिक्ष को करै है॥ १८॥

मास क्षी पूर्णिमा हीना समाना यदि वाधिका
सम र्घञ्च म हर्घञ्च महर्घञ्च भवेत् क्रमात् १९

टी०॥ महीने नक्षत्र से जो पूर्णिमासी घट होये तो अन्नादिक सब सस्ता होय और बरा बर अथवा अधिक होय तो अन्नादिक महंगा होय॥ १९॥

संक्रांति र्जाय ते यत्र भास्करः भूसुते शनौ॥ त
स्मिन्मासि भयं घोरं दुर्भिक्षं दारि तो भयम् २०

टी०॥ सूर्य मंगल शनिश्चर इन वारों में जो संक्रांति होय तो दुर्भिक्ष करै और भय बहुत होय॥ २०॥

संक्रान्ति समये भानो र्भवेत्सप्तमगः शशी।
तदा काले महर्घं स्यात्सर्व धान्यं सुनिश्चितम्

टी०॥ संक्रान्ति के दिन जो सूर्य से सातवें घर चंद्रमा होय तो उस महीने में सब अन्नादिक महंगे होंय॥ २१॥

मीने मेषे द्वि मासं स्या त्तथा सिंहे दये त्रिषु
मासं मिथुन गे सूर्य्ये द्वि मासं वृष कुंभयोः॥
कर्के म्रगेच षण्मासे मासं प्रोषे महर्घता २२

टी०॥ मीन मेष की संक्रान्ति में सूर्य्य जो सातवें से चंद्र होय तो दो महीने तक महंगा होय और सिंह में तीन महीने तक और वृष कुंभ में दो महीने तक और कर्क तथा मकर में छः महीने तक महंगा होय और बाक़ी महीनों में एक मास तक दुर्भिक्ष रहे॥ २२॥

पूर्व संक्राति नक्षत्रा त्पर संक्रमणं यादि॥ द्वि
ति ऋक्षे सुभिक्षं स्या दुर्भिक्षस्तुर्य्य पञ्च मे
षष्टे लोका भ्रमं त्यासु गृही त्वा खर्प्परं करे

टी०॥ पहिली संक्राति के नक्षत्र से दूसरे तथा तीसरे नक्षत्र पर जो दूसरी संक्राति होय तो सुभिक्ष होय और चौथे पांचवें नक्षत्र पर होय तो उसी महीने में दुर्भिक्ष अर्थात् अकाल पड़े और छठे नक्षत्र पर जो होय तो लोग खप्पर हाथ में लिये मांगते फिरें२४

ज्येष्ट स्या गमने प्राप्ते या तिथिः प्रथमा भवेत्
केन वारेण संयुक्ता विज्ञेया सा विशे षतः२५

टी०॥ ज्येष्ट लाग तेही विचार करना चाहिये कि पड़वा के दिन कौन वार है उस से फल जाना जाता है॥२५॥

भानुना पवनो वाति कुजे न व्याधिमा दिशेत्
चन्द्र पुत्रेण दुर्भिक्षं भवती ह न संशयः॥ २५
गुरु भार्गव सोमाना मे कोपि यदि जायते
वर्षा वाधि भवेत्पृथ्वी सस्य धान्य धनाकुला

टी०॥ जो ज्येष्ट वदी पडवा रवि वार की होय तो पवन चले और मंगल वारी होय तो रोग होय और वुध वार होय तो दुर्भिक्ष अर्थात् अकाल पड़े और जो पडवा ब्रहस्पति सुक्र सोम ये वारी होय तो सारी वर्षा ऋतु में ऋण धन धान्य इन की वृद्धि होय२६

अथवा दैव योगे न शनि वार स्तदा भवेत्॥ ज
ल शोषः प्रजा नाशः छत्रच भङ्ग स्तदा भवेत्॥

टी०॥ और जो उस दिन शनिश्चर वार होय तो जल को सोख प्रजा का नाश करे और छत्र भंग होय॥ २७॥

चन्द्रोदय निरी क्षेत द्वितीया लब्ध जन्मनः
ज्येष्टे तरे ह्यमा यां च भानो रस्तं विलोकयेत२८

टी०॥ दूज के चंद्रमा के उदय का विचार करै और ज्येष्ट वदी अ
मावस के दिन सूर्य्य के अस्त का विचार करना चाहिये॥ २८॥

यद्युत्तरे शशी मध्यम्वा याति दक्षिणे: रवे:।
उत्तमो मध्यमो नीच: काल: संपद्यते तदा२९

टी०॥ सूर्य्य से उत्तर में जो चन्द्रमा होय तो उत्तम समय होय औ
र जो वीच में होय तो मध्यम समय होय और जो दक्षिण में होय
तो अधम समय जानना॥ २९॥

आषाढे श्रावणे पौषे रवि भौम शनैश्चरा:॥
वासरा यत्र जायंते तत्फलं यच्छृणुष्वतत्३०

टी०॥ आषाढ सावन पौष में जो रवि शनि मंगल इन वारोंका
जो फ़ल है सो सुनो॥३०॥

पञ्चार्क वारे रोगा: स्यु:पञ्च भौमे महद्भयम्
पञ्च मन्देच दुर्भिक्षं शेषा वारा: शुभा वहा३१

टी०॥ जो पांच रवि वार होंय तो रोग होय और मंगल पांच हो
य तो भय होय और जो शनिश्चर पांच होंय तो दुर्भिक्ष पडै और वा
की वार सव शुभ हैं॥ ३१॥

आषाढे श्रावणे पौषे वैशाखे भृगु दर्शनम्॥ ३
गवां मृत्यु: प्रजा पीड़ा दुर्भिक्षं राजा विग्रह:

टी०॥ आषाढ सावन पौष वैशाख इन महीनों में जो शुक्र का उद
य होय तो पशुओं को पीड़ा होय और दुर्भिक्ष पड़ै॥ ३२॥

शुक्र शौर्य्यौ द्वयोरस्त मेक राशौ यदा भवेत्
अन्न पीडा महा युद्धं देशे देशेच्च विग्रहा३३

टी०॥ शुक्र शनि ये दोंनो जो एक राशि पर अस्त होंय तो महा युद्ध
होय और देश देश में विग्रह होय॥ ३३॥

चत्वार: पञ्चगा: खेटा वलिनस्त्वेकराशिगा:॥

राज्ञा म्बढ भयन्द द्यु रारिभिर्दुः ख दा मताः ३४

टी०॥ जो चार ग्रह एक राशि पर वर्ष लग्न से पांचवें होंय तो राजाओं का वडा भय और दुः ख के देने वाले हैं॥ ३७॥

यदा प्रतीपगो खेहो न्टपं क्षोभय तस्तदा॥
प्रतीपगास्त्रयः खेटा युद्ध द्दष्टि भयप्रदा३५

टी०॥ दो ग्रह जो वक्री होंय तो राजा को चलाय मान करे है और तीन ग्रह वक्री जो होय तो युद्ध को वरषा और भय इन को करे हैं॥

राज्य भङ्गं हि कुर्व्वन्ति चत्वारो यदि वक्रिणः
प्रतीपगाः पञ्च खेटा भङ्गदा राज्यराष्ट्रयोः

टी०॥ और चार ग्रह जो वक्री होंय तो राज्य का और देशों का भंग करने वाले हैं॥ ३६॥

अर्कशौरी भौम शौरी तमः शौरीज्यमङ्गलौ॥
गुरुशौरी महा योगो मही नाशाय कल्प्यते३७

टी०॥ रवि शनि और भौम शनि और राहु शनि और वृहस्पतिमंगल गुरु शनि ये योग पृथिवी के नाश कारी है॥ ३७॥

पञ्च ग्रहा घ्नन्ति चतुष्पदांश्च षड् वैग्रहा घ्नन्ति
समस्त भूपान्॥ सप्त ग्रहा घ्नन्ति समस्त देशा
न् अष्ट ग्रहैः स्यात्खलु कूट योगः॥ ३८॥

टी०॥ पांच ग्रह जो एक राशि पर होंय तो पशुओं का नाश होय और छः ग्रह जो होंय तो राजाओं का नाश होय और सात ग्रह जो होंय तो सव देशों का नाश होय और आठ ग्रह का कूट योग होता है॥ ३८

समाना चरतवः सर्वे वान्ति वाताः शुभा यदि
लक्षणानि शुभानि स्युः सर्व्वे देव शुभन्तदा३९

इति श्री मयूर चित्रे नारदोक्ते ग्रह योग फलं
षोडशोऽध्यायः॥ १६॥ समाप्तोयं ग्रन्थः॥

टीका॥ ऋतु विपर्य्य नहीं होंय पवन कठोर नहीं होय और- सब लक्षण शुभ होंय तो सदा शुभ होय ॥३९॥ इति श्री मयूर ॥चित्र की भाषा टीका सोलहवां अध्याय समाप्तम् ॥

ऋत्व ग्न्यङ्क निशाकरैस्स मुदिते वर्षे शुभे
वैक्रमे मासे श्रावणे के सिते नर दले शिव ति-
श्री जीव वारे शुभे॥ श्री मच्चित्र मयूर एष
महितो ग्रन्थ श्शिला यंत्रके श्रीमत्केशव
शर्म्मणाऽर्गल पुरे मुद्राङ्कितास्थापितः

लिखतं शाल ग्राम कायस्थ

मुहर विद्या रत्नाकर यंत्रालय की